तेज पाक्षिक, मनोरंजन टैक्स १.५० रुपये
अंक : १८ वर्ष : १८ : १५-३० सितम्बर : १९८२

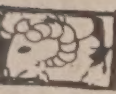
दीवाना

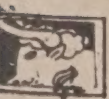


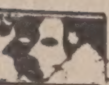

लूलाल
तो समाचार बुरे हैं। अभी तक अमिताभ बच्चन की हालत नाज़ुक है। बेचारा इन्टेंसिव केयर यूनिट में पड़ा है। पेट के अन्दर जख्म में पस पड़ गया है।
हां, इस बात पर याद आया कि गुरमीत कह रहा था, मोलिना अमिताभ बच्चन की फैन है। दिन रात उसी की बात करती रहती है। छुट्टियों में बम्बई सिर्फ़ उसके आटोग्राफ लेने गयी थी।
वह जरूर रोज अमिताभ के बारे में हास्पिटल बुलेटिन पढ़ती रहती होगी और शायद रो भी रही होगी। ऐसे में चक्कर चलाया जा सकता है। गुरमीत कहता था वह किसी को घास नहीं डालती। अब यह है मौका, उसके पास सहानुभूति प्रकट करने जाया जा सकता है।
इसी बहाने परिचय हो जायेगा। बातचीत होगी। अरमान करवट लेंगे। फूल खिलेंगे, गुलशन महकेगा।
अगर मैंने अपनी चालें ठीक चलीं तो कुछ ही दिनों में वह अमिताभ की बजाय मेरे ख्यालों में डूबी रहेगी।
उसके पास जाना है तो रामायण जरूर पढ़नी चाहिए। राम के बिछोह में दशरथ ने, सीता के अपहरण पर राम ने और लक्ष्मण के मूर्छित होने पर राम ने जो विलाप किया था वह डायलाग याद करने होंगे। बड़े जोरदार डायलाग हैं।
वही डायलाग मैं अमिताभ की बीमारी पर मोलिना को सुनाऊंगा। मेरी गहरी संवेदना देख कर उसका दिल हिल जाएगा। जोरदार इम्प्रेशन पड़ेगा। कामयाबी उसी के हाथ लगती है जो सही वक्त पर सही चाल चल जाता है और मेरा यह वार खाली नहीं जा सकता।
यार यहां यह भीड़ कैसी लगी है? क्या राशन की नई दुकान खुली है या एशियाई खेलों के टिकट बिक रहे हैं?
प्यारे यह कुछ और ही चक्कर है। यहां एक लड़की मोलिना रहती है। सबको पता है वह अमिताभ की फैन है। अमिताभ बीमार है न। बस उससे सिम्पैथी प्रकट करने के लिये सारे लौंडे-लपाड़े इकट्ठे हो गए हैं। उससे मिलने का बहाना मिला है। तू भी लग जा लायन में। शाम तक बारी आ ही जाएगी।

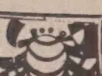
आपका भविष्य

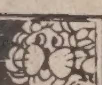
पं॰ कुलदीप शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं॰ हंसराज शर्मा

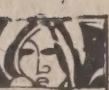

मेष : शुभफलों की आशा भले ही न हो, लेकिन यह सप्ताह सुधारों की सूचना देता है, कुछ उतार-चढ़ाव देखने में आयेंगे, और संघर्ष भी काफी रहेगा, फिर भी लाभ समय पर होता रहेगा।

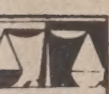

वृष : इन दिनों शुभ-अशुभ मिश्रित फलों की प्राप्ति होती रहेगी, काम-धन्धा ठीक चलेगा, परन्तु लाभ मध्यम होगा, हिस्सेदारों की ओर से परेशानी, सहयोगी संग-संग रहेंगे, यात्रा में सुख।

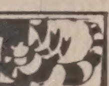

मिथुन : धन की प्राप्ति होने से परिवार एवं व्यापार की दशा सम्भलेगी, कोई आवश्यक या रुका हुआ काम बन जाने से आर्थिक लाभ भी अच्छा मिलेगा, आलस्य एवं बीमारी दूर भागेगी।

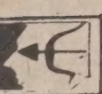

कर्क : संघर्षमय वातावरण में से गुजरना पड़ेगा, सावधानी से एवं सोच-विचार कर काम करने में ही भलाई है वर्ना किसी भारी संकट में पड़ सकते हैं, आमदनी का रास्ता बना रहेगा।

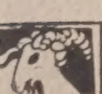

सिंह : शत्रु, रोग एवं बाधायें उत्पन्न होकर कम हो जायेंगी, नये काम से हानि, लेकिन स्थायी काम-धन्धों से लाभ होता रहेगा, यह सप्ताह शुभ-अशुभ मिश्रितफलों से युक्त है।

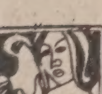

कन्या : शुभफलों से युक्त होने पर भी यह सप्ताह किसी अप्रिय घटना के होने की सूचना देता है, हालात तकरीबन ठीक चलेंगे एवं कामनायें भी पूरी होती रहेंगी, लाभ बढ़ेगा।

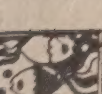

तुला : यह सप्ताह अच्छे-बुरे मिले-जुले फलों से युक्त है, संघर्ष एवं परिश्रम का जोर बढ़ेगा, अशुभ फलों में कमी आयेगी, रोजगार में उन्नति के चांस मिलेंगे, दोस्त साथ देंगे।


वृश्चिक : सप्ताह विशेष अच्छा तो नहीं फिर भी कठिन परिश्रम से कुछ कार्य सिद्ध हो सकेंगे, व्यर्थ के वाद-विवाद से मन परेशान, किसी दूर के रिश्तेदार या दोस्त से परेशानी भरा समाचार।


धनु : पिछले दिनों की अपेक्षा यह सप्ताह अच्छा रहेगा, परिश्रम के अनुसार सफलता एवं लाभ होगा, वातावरण सुधरेगा, उत्साह बढ़ेगा, धन व्यय के साथ-साथ लाभ भी होता रहेगा।


मकर : यह सप्ताह अच्छा है परन्तु संघर्ष एवं वाद विवाद में उलझना आपके हित में नहीं, लाभ की प्राप्ति एवं हालात में सुधार लाने के लिए कठिन परिश्रम करना होगा।


कुम्भ : शुभफलों का संचार होगा एवं शुभ परिवर्तन होते दिखाई देंगे, उत्साह बढ़ेगा, कामों में सफलता पाने के लिए दौड़-धूप एवं व्यय काफी करना पड़ेगा, भाग्य सहारा देगा।


मीन : यह सप्ताह विशेष अच्छा नहीं है, धैर्य एवं सावधानी से काम लेना अच्छा है, आलस्य से बचें, काम देर से बनने से लाभ भी देर से मिलेगा, जल्दबाजी से काम लेना आपके हित में नहीं।

आपके पत्र

अंक 15 पढ़ा। बेहद पसन्द आया। आपस की बातें में चाचा जी के दिए, उत्तर बहुत अच्छे लगे। मुख पृष्ठ पर चिल्ली शतरंज खेलते हुए बहुत अच्छे लग रहे थे।

—सतीश अनेजा, सिरसा

दीवाना अंक 15 मिला। एक बहुत ही प्यारा अंक था। क्योंकि इस अंक में मोटू-पतलू, बुरे फंसे व सवाल यह है काफी दिन में देखने को मिला था। अन्य स्तम्भ भी एक से एक बढ़कर थे। पिलपिल-सिलबिल, राजा जी, मदहोश आदि ने तबियत हरी कर दी और चिल्ली लीला ने भी वर्षों के पतझड़ को हरियाली में बदल दिया।

—वेद प्रकाश 'अमित' घोंडा, दिल्ली

दीवाना का अंक 15 मिला ? अंक देखते ही दीवाना हो गया ? गहनों का वैज्ञानिकीकरण, सिविलियन-सिग्नलस, बुरे फंसे, सवाल यह है ? सिलबिल-पिलपिल रोचक रहे।

—अनिल बी. सरैया 'अनमोल' जामनगर

दीवाना नाम सुनते ही मैं दीवाना हुआ जाता हूं। सच में 'दीवाना' सभी हास्य पत्रिकाओं में सबसे ज्यादा हंसाने वाला है उसमें जैसे हंसी का महासागर है।

लेकिन दीवाना हमें बहुत देर से मिलता है, कृपया समय पर अंक निकालें और 'दीवाना' को रंगीन कर दें तो हम सब पाठक अत्यन्त आभारी रहेंगे।

—अब्बास नशीम, महादेवपुरा, वर्धा

हँसी का खजाना दीवाना का नया अंक 15 पढ़कर बहुत प्रसन्नता हुई। आपस की बातें, सवाल यह है कि और किस्सा-ए-माडर्न आर्टस में बहुत दीवानगी भरी हुई थी। क्यों और कैसे जानकारी से भरपूर था। बाकी सब ठीक लगा।

—अजिन्द्र सिंह चुघ, शाहबरा

अंक पन्द्रह, दीवाना का पढ़ा। पृष्ठ खोलते ही हँसी का फव्वारा छुट पड़ा। प्रत्येक पृष्ठ भरपूर दीवाना बना देता है। फिर भी दीवाना में कमी खटकती है, रंगीन न होने की। मेरा अनुरोध है कि दीवाना को शीघ्र ही रंगीन किया जाय।

—दिनेश बिश्व कर्मा, अलीराजपुर

दीवाना का नया अंक मिला। पढ़कर बहुत खुशी हुई। मोटू-पतलू, फैंटम और गहनों का वैज्ञानिकीकरण बहुत ही अच्छे थे। लघु कथा 'कारण' बहुत अच्छी लगी, लेखक को धन्यवाद। चिल्ली लीला पढ़ने को मिली तो दिल बाग-बाग हो उठा। आशा है आप चिल्ली-लीला को प्रत्येक अंक में दिया करेंगे।

—राजेन्द्र सिंह बेदी व सुखवन्त सिंह बेदी
सितारगंज (उ. प्र.)

मुख पृष्ठ पर

केश सुखाये धोयकर
सुन्दर उसकी शान
लेकिन अपनी कला में
चिल्ली निपट नादान।
हैज समझकर केश को
किया कर्तन तत्काल
जल्दी-जल्दी काटकर
कर दिये छोटे बाल॥

दीवाना

अंक : १८ वर्ष : १८ १५-३० सितम्बर १९८२

सम्पादक : विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिका : मंजुल गुप्ता
दीवाना तेज पाक्षिक
८-बी, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

वार्षिक चन्दा	:	२७ रुपये
अर्द्ध वार्षिक	:	१४ रुपये
एक प्रति	:	१.५० रुपये

नई फिल्म

राजीव हसीजा



शुक्रवार का दिन था। चारों ओर भीड़ ही भीड़ थी। चारों और गहमा-गहमी। सब व्यक्ति अपने में व्यस्त थे। सड़कें कारों, स्कूटरों, बसों, साइकिलों और पैदल चलने वालों से भरी हुई थीं। दूकानें ग्राहकों से भरी हुई थीं। शाम का ही समय था। बाजार से थोड़ा आगे एक सिनेमा घर था। सिनेमा घर में भी काफी भीड़ थी क्योंकि आज के दिन कोई नई फिल्म लगी थी। सभी मनोरंजन के इच्छुक सिनेमा देखने सिनेमा घर आये थे। बच्चे, बूढ़े और जवान सभी तरह के लोग थे। सिनेमा घर की टिकट खिड़की में भी लंबी-लंबी कतारें लगी हुई थीं। इन लम्बी-लम्बी कतारों को देखकर ही पता लग जाता था कि आज शुक्रवार का दिन है और कोई नई फिल्म लगी है।

मैं भी फिल्म देखने सिनेमाघर आया परन्तु लंबी-लंबी कतारें देखकर घबरा रहा था। फिर भी मैं हिम्मत करके कतार के पीछे खड़े होने के बजाए लंबी कतार के बीच में आखें बंद करके घुस गया। मेरे बीच में घुसते ही लोगों में खलबली मच गई, लोग शोर मचाने लगे, परन्तु मैंने इसकी परवाह न की। मैं आखें बंद किए हुए युद्ध क्षेत्र में डटा रहा। तभी एक जोरदार प्रहार मेरी पीठ पर हुआ, जिसकी वजह से मैं गिरते-गिरते बचा। पीछे खड़े हुए लोगों के मुक्के मैं आंखें बन्द करके ही सहता रहा।

जब मुझ पर काफी देर तक कोई आक्रमण न हुआ तो मैंने डरते-डरते आंखें खोलीं तो मैं हैरान रह गया। क्योंकि मैंने पाया कि मैं लाइन से बाहर खड़ा हुआ हूं। आखिर कतार के पीछे खड़ा होना पड़ा क्यों कि मैं असफल होकर घर नहीं लौटना चाहता था। काफी देर बाद जब मेरी टिकट लेने की बारी आयी तो टिकट देने वाले को प्यास लग आई। मैं व्याकुल सा खड़ा होकर इंतजार करने लगा। जब टिकट देने वाला आया तो मैंने दस का नोट उसकी ओर बढ़ा दिया और खीझ भरे शब्दों में उसे एक टिकट देने को कहा। उसने मुझे ३५ पैसे खुले देने को कहा, मेरे पास न होने पर उसने मुझे लाइन से अलग हटने का इशारा किया और कहा ''पहले ३५ पैसे खुले लाओ''।

मैं घबरा गया। लाइन से अलग हटने, का अर्थ था कि आज की फिल्म कैंसिल। मेरे पीछे खड़े हुए व्यक्ति को मेरी हालत पर दया आई। उसने मुझे ३५ पैसे दिये। आखिर मैने बिल्कुल नई फिल्म का टिकट पा ही लिया। मैं गर्व से चलता हुआ सिनेमा घर में चला गया। फिल्म शुरू हो चुकी थी। मैं फिल्म देख रहा था परन्तु कुछ समझ न आ रहा था। थोड़ी थोड़ी देर ही में लड़ाई शुरू हो जाती थी। खूब शीशे, कार आदि टूटते रहे। हीरो मार खाता और खिलाता परन्तु आजकल हेयर ड्रैसिंग बहुत उन्नति करता जा रहा है क्योंकि फिल्म के हीरो के बालों की सैटिंग पहाड़ से छलांग लगाने के बाद भी कायम थी। फिल्म के गाने तो और भी ज्यादा बोर कर देने वाले थे। एक गाने पर मैं भी उठ कर बाहर आ गया तो देखा कि दो सिपाही एक मैले कपड़े पहने व्यक्ति को पकड़ कर ले जा रहे थे। मालूम हुआ कि ब्लेक कर रहा था। मैंने सोचा कि कितनी बकवास फिल्म है तो भी ब्लैक हो रही है। परन्तु बाद में ज्ञात हुआ कि फिल्म के टिकट की नहीं बल्कि सिर दर्द की गोली (सेरीडान) की ब्लैक कर रहा था।

मैं घूमते-घूमते सिनेमाघर के मैनेजर के कमरे के पास पहुंचा तो देखा कि एक आदमी मैनेजर के पास आया और बोला, ''मेरी पत्नी किसी दूसरे व्यक्ति के साथ फिल्म देख रही है। कृपया आप उसे बाहर आने के लिए कह दीजिए''।

मैनेजर को उस व्यक्ति पर दया आई और मध्यांतर होते ही स्टेज पर आकर घोषणा की, ''जो देवी जी अपने पति को छोड़कर दूसरे व्यक्ति के साथ फिल्म देख रही हों वह तुरन्त बाहर आ जाएं, उनके पति बाहर उनकी प्रतीक्षा कर रहे है।

फिर मैंने देखा कि आधे से अधिक हाल खाली हो गया।

सच्ची बात तो यह है

लोग जो कुछ कहते हैं उसका असली अर्थ कुछ और ही होता है जैसे—



मरवा डाला फिल्मी फार्मूलों ने



(दीपक श्रीवास्तव)

रामलाल जी खजूर के पेड़ की तरह सीधे लम्बे कद के थे। उन्होंने एम. ए. में एडमीशन लिया। सभी उन्हें अमिताभ बच्चन कह कर सम्बोधित करते। रामलाल जी इस सम्बोधन से मन ही मन बड़े खुश होते थे। पर रामलाल जी को एक बात का दुख था कि वह अपने शर्मीले स्वभाव के कारण कोई गर्ल-फ्रेंड नहीं बना सके।

आखिर उन्होंने यह निश्चय कर लिया कि अब वे भी इश्क का कोई गुल खिलायेंगे। सो उन्होंने फिल्मी फार्मूला चुराया कि यदि किसी लड़की की वस्तु लुटेरे से छीन कर वापस कर दी जाये तो लड़की उसकी बहादुरी पर मर मिटती है। रामलाल जी होस्टल की एक लड़की पर फिदा थे। सो एक योजना के मुताबिक नकली दाढ़ी-मूंछें लगा, गुण्डे का भेष बनाकर होस्टल के पास खड़े हो गये जैसे ही वह लड़की होस्टल गेट से बाहर निकली, रामलाल जी उसके पास गये और उसका पर्स छीन कर नौ-दो ग्यारह हो गये।

अब इसी फार्मूले का दूसरा पहलू होना था। वह दाढ़ी, मूंछ उतार कर फिर पहुंच गये उसी लड़की के पास और उसे पर्स लौटा कर अपनी बहादुरी बताने लगे कि किस तरह उन्होंने उस गुण्डे से पर्स वापस लिया था। लेकिन यहां तो फिल्मी-फार्मूले के विपरीत हुआ। उस लड़की ने उन्हें पीटना शुरू कर दिया। देखा-देखी दर्शकों की भीड़ ने भी रामलाल जी पर थप्पड़ और लातों की बरसात शुरू कर दी। दरअसल में रामलाल जी का विचार था कि दाढ़ी और मूंछ हटा देने पर वह लड़की और लोग इन्हें दूसरा व्यक्ति समझेंगे जैसा कि फिल्मों में अक्सर दिखाया जाता है पर यहां तो उनके साथ उल्टा ही हुआ। सबने लम्बू पहचान लिया था।

रामलाल जी ने इतनी पिटाई के बाद भी आत्म विश्वास का दामन नहीं छोड़ा। उन्हें पूरा विश्वास था कि एक-न-एक दिन वह किसी युवती का दिल जरूर जीत लेंगे। रामलाल जी ने एक अन्य फिल्मी फार्मूला चुराया जिसमें एक हीरोइन गुण्डों के बीच अकेली घिरी होती है, इतने में हीरो आ जाता है और गुण्डों की जम कर पिटाई करता है। इससे नायिका, नायक को अपना दिल दे बैठती है। अब रामलाल जी सुनसान सड़कों पर जहां अक्सर लड़कियों को छेड़ने की घटनायें हुआ करती थीं, रोज सज-धज के घूमने लगे। एक दिन किस्मत से उन्हें मौका मिल ही गया। एक नारी कंठ की चीख सुनाई पड़ी। रामलाल जी उधर ही दौड़ पड़े, उन्होंने एक युवती को कुछ गुण्डों में अकेली घिरी पाया। आव देखा न ताव, रामलाल जी ने लगा दी अमिताभ बच्चन की उछाल, लेकिन भाग्य उनके साथ कहां था। बेचारे बजाय, गुण्डों के ऊपर गिरने के जमीन पर आ गिरे। इधर गुण्डों ने अचानक किसी खलनायक को आते देख कर उसे मुक्के, लात जमाना शुरू कर दिये। रामलाल जी को तारे ही तारे नजर आने लगे। तभी उन्हें ख्याल आया कि यही मौका था, कुछ करके दिखाने का। सो हिम्मत करके उठे परन्तु कुछ भी दिखाई न देने के कारण हवा में ही उल्टे-सीधे पैर मारने लगे। शोर मच जाने के कारण बहुत से राहगीर आ गये जिन्हें देखकर गुण्डे भाग गये। पर इसको क्या कहिए कि एक राहगीर ने रामलाल जी को ही गुण्डों का साथी समझकर एक भरपूर थप्पड़ जड़ दिया। थप्पड़ जरा जोर से लगा। अब रामलाल जी बेहोश हो चुके थे।

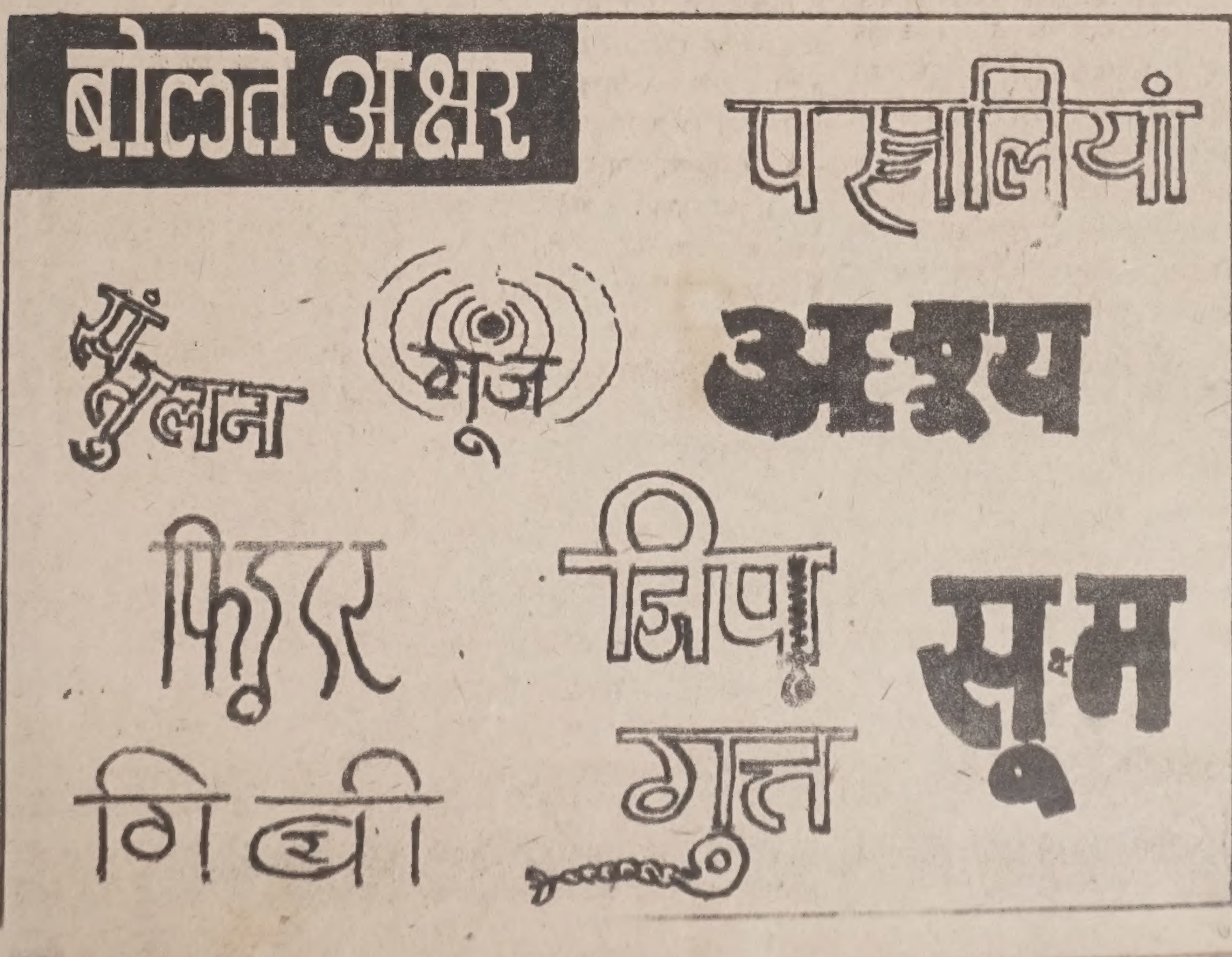
होश आया तो उन्होंने खुद को एक बैड-रूम में पाया। उन्होंने समझ लिया कि हो न हो वह उसी लड़की के घर में थे जिसके लिए उन्होंने इतनी मार खायी थी। इतने में किसी के आने की आहट सुनकर, वह जान-बूझकर आंखें

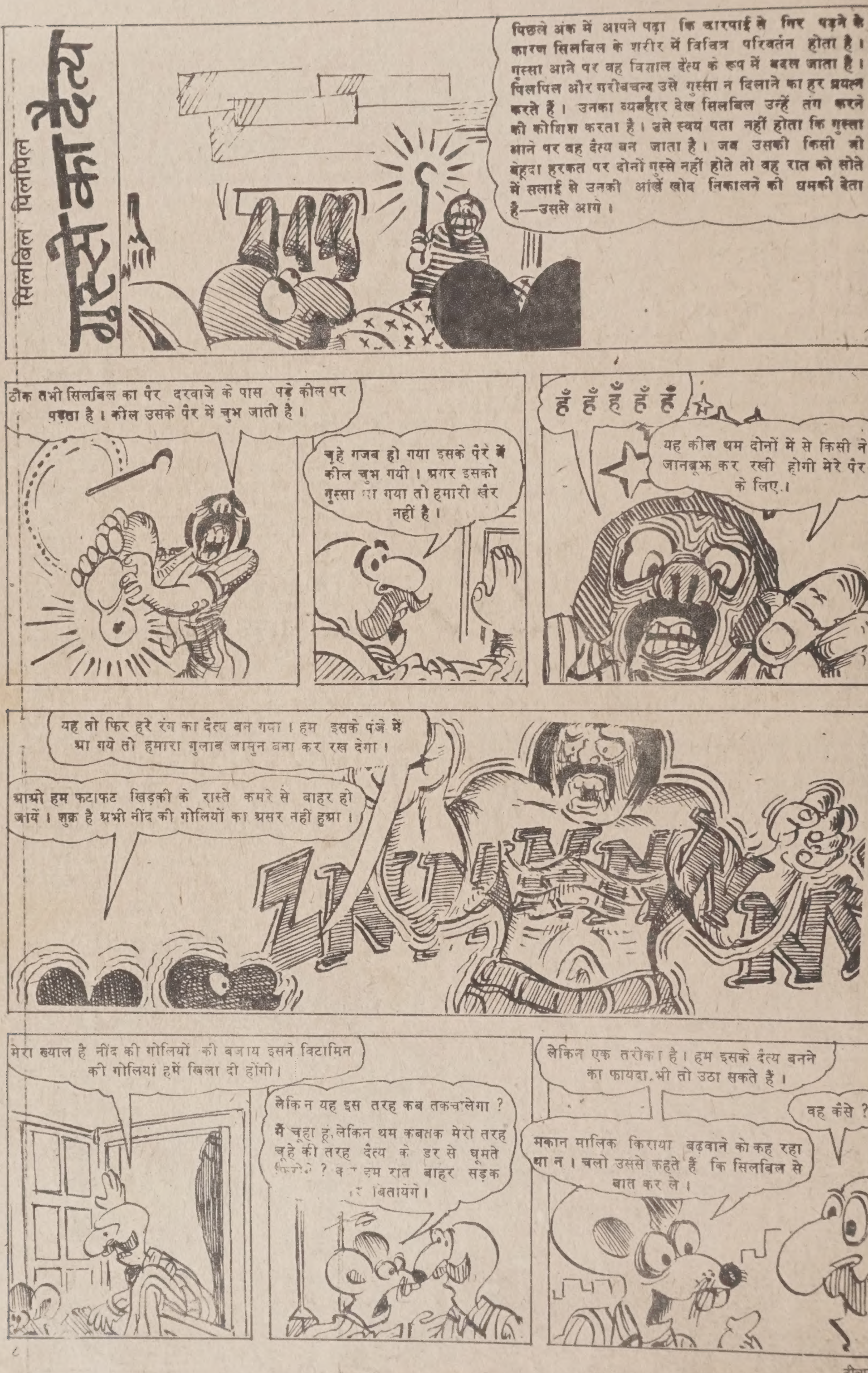
बन्द करके लेट गये। थोड़ी देर बाद उनके सर पर एक नाजुक सा हाथ थपथपाने लगा। नाजुक उंगलियों की कंघी उनके बालों पर होने लगी। रामलाल जी मन ही मन अपनी कामयाबी पर गर्व कर रहे थे। उन्होंने हिम्मत करके उन नाजुक कलाइयों को पकड़कर उन हाथों को चूम लिया और आंखें खोल लीं। देखा कि एक बूढ़ी क्रिश्चियन महिला गर्दन झुकाये खड़ी थी। वह प्रेम से बोली, 'ओ जेण्टिल मैन। तुम हमको हमारा बेटा माफिक प्यार किया। तुमने हमको गुण्डों से बचाया। वो हमारा पर्स छीनना मांगता था। बेटे! तुम बहुत अच्छा है। हम तुमको बहुत प्यार करता है।'

रामलाल जी को मामला समझ आया तो तुरन्त भाग लिए। परन्तु इतने पर भी रामलाल जी ने अपना आत्मविश्वास नहीं खोया। उन्हें अब भी विश्वास था कि एक दिन जरूर कामयाबी मिलेगी। अब उन्होंने तीसरा फिल्मी फार्मूला चुराया और इसे अपनी क्लास की एक छात्रा पर अपनाया। वह कभी उसे गाना गाकर छेड़ते तो कभी उसे घूर कर देखते और मुस्करा देते कभी कोई फूल उसकी ओर फेंक देते। यह सिलसिला कई दिन चला। रामलाल जी ने उसका घर तक पीछा करना शुरू कर दिया। वह छात्रा बराबर विरोधस्वरूप क्रोध प्रकट करती थी, पर रामलाल जी निराश नहीं हुए। जानते थे कि फिल्मों में पहले गुस्सा और बाद में प्यार होता है। नफरत को प्यार की पहली सीढ़ी इसीलिए तो कहा जाता है।

आखिर एक दिन उन्हें 'कामयाबी' मिल ही गई। वह छात्रा इनकी हरकतों पर क्रोधित होने के बजाये मुस्कराने लगी। यही नहीं, उसने रामलाल जी को एक दिन अपने घर भी बुलाया। रामलाल जी अपनी कामयाबी पर फूले नहीं समा रहे थे। खूब सज-धज कर उसके घर पहुंचे। छात्रा ने मुस्कराकर उनका स्वागत किया और सम्मान के साथ ड्राइंगरुम में बिठाया। इतने में चार हट्टे कट्टे सरदार कमरे में आ धमके। उस छात्रा ने उन सरदारों से कहा, 'भय्या। ए ही मुण्डा (लड़का) रोज मेरा पीछा करता है।' रामलाल जी ने समझा वह अपने भाईयों से परिचय करा रही थी। सो नम्रता पूर्वक हाथ जोड़ कर खड़े हो गये। पर मामला समझ में तब आया जब दो सरदारों ने कसकर उन्हें पकड़ लिया। फिर बाकी दो सरदारों ने उनकी खूब ठुकाई शुरू कर दी। ऐसी आवाज आने लगी जैसे कोई जुलाहा कहीं रुई की धुनाई कर रहा हो या कसाई 'कीमा' बना रहा हो। रामलाल जी पिटते रहे आखिर जब चारों सरदार थक गये तो उन्होंने उसे कचरे की तरह घर से बाहर फेंक दिया।

रामलाल जी का आत्मविश्वास अब टूट चुका है और टूटता भी क्यों न? उनकी कमर और हाथ-पांव जो टूट चुके थे। उन्होंने इश्क से अब सदा के लिये हाथ जोड़ लिए हैं।




सिलबिल पिलपिल
गुस्से का दैत्य
पिछले अंक में आपने पढ़ा कि चारपाई से गिर पड़ने के कारण सिलबिल के शरीर में विचित्र परिवर्तन होता है। गुस्सा आने पर वह विशाल दैत्य के रूप में बदल जाता है। पिलपिल और गरीबचन्द उसे गुस्सा न दिलाने का हर प्रयत्न करते हैं। उनका व्यवहार देख सिलबिल उन्हें तंग करने की कोशिश करता है। उसे स्वयं पता नहीं होता कि गुस्सा आने पर वह दैत्य बन जाता है। जब उसकी किसी भी बेहूदा हरकत पर दोनों गुस्से नहीं होते तो वह रात को सोते में सलाई से उनकी आंखें खोद निकालने की धमकी देता है—उससे आगे।
ठीक तभी सिलबिल का पैर दरवाजे के पास पड़े कील पर पड़ता है। कील उसके पैर में चुभ जाती है।
चूहे गजब हो गया इसके पैर में कील चुभ गयी। अगर इसको गुस्सा आ गया तो हमारी खैर नहीं है।
हँ हँ हँ हँ हँ
यह कील थम दोनों में से किसी ने जानबूझ कर रखी होगी मेरे पैर के लिए।
यह तो फिर हरे रंग का दैत्य बन गया। हम इसके पंजे में आ गये तो हमारा गुलाब जामुन बना कर रख देगा।
आओ हम फटाफट खिड़की के रास्ते कमरे से बाहर हो जायें। शुक्र है अभी नींद की गोलियों का असर नहीं हुआ।
मेरा ख्याल है नींद की गोलियों की बजाय इसने विटामिन की गोलियां हमें खिला दी होंगी।
लेकिन यह इस तरह कब तक चलेगा?
मैं चूहा हूं, लेकिन थम कबतक मेरी तरह चूहे की तरह दैत्य के डर से घूमते ? हम रात बाहर सड़क बितायेंगे।
लेकिन एक तरीका है। हम इसके दैत्य बनने का फायदा भी तो उठा सकते हैं।
वह कैसे?
मकान मालिक किराया बढ़वाने को कह रहा था न। चलो उससे कहते हैं कि सिलबिल से बात कर ले।



तुम इस वक्त यहां ?
आप पिछले महीने कह रहे थे न कि किराया बढ़वाना है ? सो चलिये इसी वक्त सिलबिल से बात कर लें ।
लेकिन इस वक्त ? रात के बारह बजे ।
बात यह है अब वह घर का इंचार्ज बन गया है ।
मनीराम बागड़ी जी, जब पैसा बनाने की बात होती है तो क्या दिन क्या रात, एक ही बात है । कल सुबह की फ्लाइट से सिलबिल वाशिंगटन जा रहा है । चार महीने बाद ही आएगा । बात लम्बी टल जाएगी ।
ठीक है । मैं अभी चलता हूं ।
सिलबिल जी, यह अपने मकान मालिक हैं याड़ी ! किराया बढ़वाना चाहते हैं ।
क्या यह वही सिलबिल है जो मुझे देखते ही बाथरूम में छिप जाया करता था ?
हनननननन
ओये मच्छर दे पुत्तरा तू मेरा मकान मालिक है ? किराया बढ़वाना चाहता है ?
य य यह किसने कहा ? म म मैं क्यों किराया बढ़वाने लगा । मैं इतना लालची थोड़े ही हूं ।
तो तू फिर इस वक्त क्या मेरे साथ हनीमून मनाने आया है ?
मैं तो इस वक्त यह कहने आया था कि मैं पहले ही आपसे ज्यादा किराया ले रहा हूं । बिस्तरे में लेटे-लेटे ही मेरी आत्मा ने मुझे कचोटा और मैं दौड़ा आया । मैं किराया पहले से सौ रुपए कम करना चाहता हूं ।
शाबाश !
मुझे क्या हो गया था ? मेरा शरीर टूट रहा है, बड़ी थकावट हो रही है ।
तेरा जिस्म टूट रहा है तो कोई बात नहीं । इसी के कारण हमारा किराया भी सौ रुपए टूट गया है ।
अरे चूहे मेरे दिमाग में एक धांसू आइडिया आया है । हम तो इसकी मदद से पैसे कमा सकते हैं । गेहूं के सीजन में गुड़गांवे या रोहतक की मंडियों में इससे पल्लेदारी करवायें तो तीस-चालीस हजार रुपए कमा लेंगे । पचास-साठ ट्रकों का माल तो अकेले ही दिन भर में उतार लेगा । और एक बोरी के बीस-पच्चीस पैसे मिल ही जायेंगे ।
इतने टोस्ट और सेंडविच-हम्बर्गर खाने के बाद भी थमारा दिमाग काला दन्त भंजन छाप हो रह गया । अरे भई हम इसे किराये पर फिल्म वालों को देकर लाखों कमा सकते हैं । स्टंट फिल्मों वाले हाथ-पैर जोड़ कर हमारे आगे-पीछे घूमा करेंगे ।



पिलपिल पिलपिल के नये कारनामे अगले अंक में पढ़िये

हास्य व्यंग्य

और हमें खबर न हुई

मूल : पितरस बुखारी

जब मर्ज बहुत पुराना हो जाये और अच्छा होने की कोई उम्मीद बाकी न रहे तो जिंदगी की सारी खुशियां सीमित होकर बस यहीं तक रह जाती हैं कि चारपाई के सिरहाने मेज पर जो अंगूर का गुच्छा रखा है, उसके चंद दाने खा लिये और महीने-दो-महीने के बाद कोठे पर जाकर गुस्ल कर लिया और कभी-कभी बाल कटवा लिये।

विद्यार्थी-जीवन का मर्ज पैदा हुए कई वर्ष बीत चुके। शबाब का रंगीन जमाना इम्तिहानों में जवाब लिखते-लिखते बीत गया। अब जिंदगी के दो-चार दिन बाकी हैं, वे सवालात करते-करते गुजर जायेंगे। एम. ए. का इम्तिहान भी एक सख्त मर्ज था। यकीन था कि इसके बाद या तो यह मर्ज न रहेगा या हम न रहेंगे। इस समय तो मर्ज बाकी है और हम हरचंद कहें कि हैं—नहीं हैं। विद्यार्थी-जीवन में बेफिक्री का जमाना था। नरम-नरम गद्दों पर सोते थे और ऐश करते थे। मगर अब सिर्फ इतना ही तकदीर में है कि अंगूर खा लिये और बाल कटवा लिये।

जीवन की सारी दौड़-धूप अब केवल एक कमरे और स्टाफ-रूम तक है। दोनों के बीच का हर मोड़ प्रलय के समान है।

कभी 'राखी' (पत्रिका) से बड़ी दिलचस्पी थी। सुबह उठकर उसको पढ़ना कर्तव्य में शामिल था। मगर अब 'राखी' के एडीटर से भी डरता हूं कि कहीं सलाम न मार दें। हाल में से गुजरना कयामत है। खौफ का यह हाल है कि कमरे के हर खम्भे के पीछे एक एडीटर छिपा हुआ जान पड़ता है।

विद्यार्थी-जीवन में बड़े हंगामे मचाये, मगर अब जलसे की सदारत (अध्यक्षता) से भी घबराता हूं। काजी साहब किबला ने अगले दिन कालिज में एक मुशायरा किया और मुझे मुशायरे का सभापति बना दिया। फिर मेरी हरकत को कड़ी नजरों से देखने लगे। मेरे चारों ओर एक गरमा-गरम महफिल थी, जिसमें मैं कंचन जंघा की चोटी की तरह फिट था।

जिस दिन कालिज में छुट्टी होती थी मेरे ऊपर उदासी छा जाती थी। मैं जानता था कि छुट्टी के दिन यार लोग



धोती पहने, तौलिया हाथ में लटकाये और साबुन की टिकिया लिए बाहर-एक बजे तक नजर आते रहेंगे। नहाने के बाद गन्ना चूसेंगे, उसके बाद खाना खायेंगे, फिर चील और कौओं को एक बड़ी दावत देंगे।

अब यह हाल है कि महीनों से छुट्टी की ताक में रहता हूं। जानता हूं कि अगर इस छुट्टी के दिन बाल न कटवाये तो फिर दूसरे साल गर्मियों की छुट्टी में बाल कटवाने पड़ेंगे। इस छुट्टी के दिन अगर दी हुई किताब वापस न मांगी तो यार लोग हजम कर जायेंगे। अगर आज के दिन मछली के शिकार को न गया तो फिर मछली चखना भी नसीब न होगा।

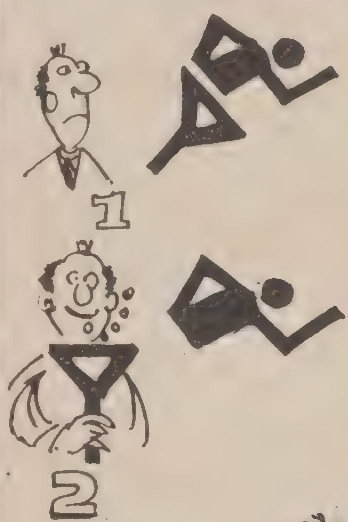
अब तो दिलचस्पी सिर्फ इतनी रह गयी है कि 'फोर्थ इयर' की हाजिरी लगाने लगता हूं तो सोचता हूं कि इस दरवाजे के पास जो नौजवान काली टोपी पहने बैठा है और उस दरवाजे के पास जो नौजवान सफेद पगड़ी पहने बैठा है, ये दोनों ही हाजिरी देने के बाद जादू की करामात से गायब हो जायेंगे। एक साहब तो सिनेमा देखने चले जायेंगे और दूसरे साहब भगत की दुकान में दूध पीते दिखाई देंगे। इस जमाने में ऐसे खेल होते हैं।

यहां पर मैं उन लोगों की अक्लमंदी की भी दाद दूंगा जो रोजाना देर से आते हैं और यह कहकर हाजिरी लगवाते हैं कि उनका गरीबखाना काफी दूर है और मैं यह भी जानता हूं कि उनका गरीबखाना और दौलतखाना बिल्कुल ही करीब हैं। सब जानते हुए भी उनसे नहीं कहता कि उनको मेरी बात पर यकीन नहीं आयेगा। कभी एक मिनट या दो मिनट की फुरसत नसीब नहीं हुई तो दिल बहलाने के लिए ये सवाल काफी है कि हाल की घड़ी मीनार की घड़ी से तीन मिनट पीछे है और दफ्तर की घड़ी हाल की घड़ी से सात मिनट आगे है। चपरासी ने सुबह दूसरी घण्टी मीनार की घड़ी से पांच मिनट पहले बजायी और तीसरी घण्टी हाल की घड़ी से नौ मिनट पहले, तो जरा जोड़कर बताओ किसका सिर पहले फोड़ा जाये?

वहीं मैंने कहा कि अंगूर खा लिया, गुस्ल कर लिया और नाखून कटवा लिये— दिल ने दुनिया नयी बसा डाली और हमें आज तक खबर न हुई।

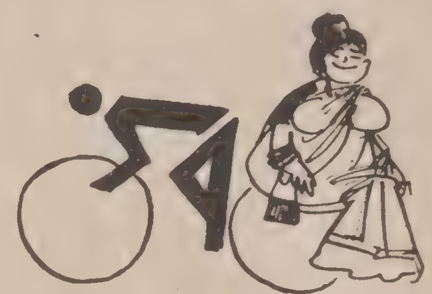
● अनु० : तरनजीत

एशियाई खेलों के प्रतीक चिन्हों के साथ खिलवाड़



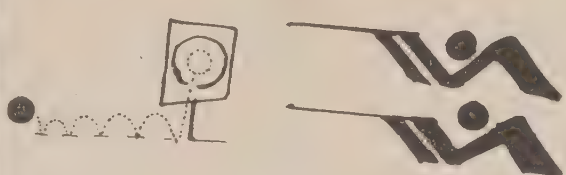
दौड़

दौड़ की होड़ में हिस्सा नहीं ले रहे तो क्या ? कॉकटेल पार्टी की पीने की होड़ में पीछे नहीं रहेंगे ।



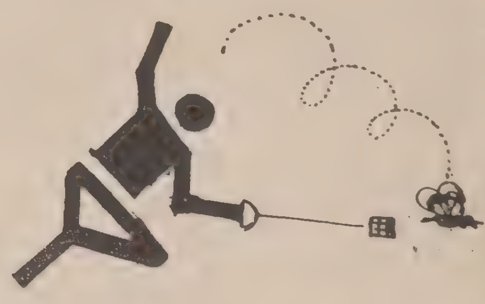
साइकलिंग

साइकलिंग करने वालों की भी तो बीवियां होती हैं !



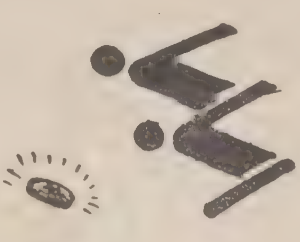
निशानेबाजी

धायं धायं फिस्स हो जाये तो !



तलवारबाजी

घर में मक्खियां मारने की नौबत आये तो ?



डाइविंग

सड़क पर बादाम ही [illegible] दिखने पर डाइवरों की मुद्रा ?



वालीबाल

घर में बच्चे भी तो खिलाने पड़ते होंगे !



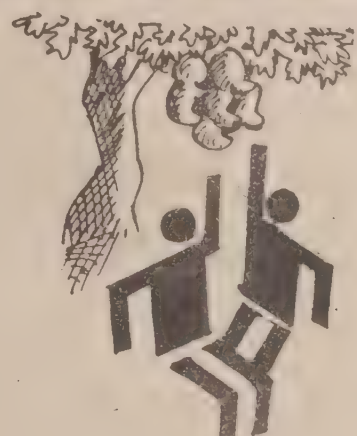
हाकी

हाकी खिलाड़ियों की बीवियों को उनसे झाड़ू लगवाने में कितना मजा आता होगा।



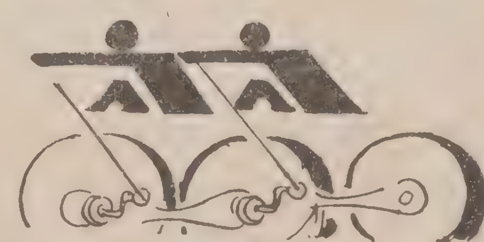
जिमनास्टिक्स

कोई बात नहीं, घास पर पैर रखने की इजाजत नहीं है तो हम ऐसे ही हाथ मिला सकते हैं।



बास्केटबाल

आमों का सीजन है तो एक टोकरी आमों की न उतार ली जाए।



नौकायन

क्या नौकायन करने वालों के घर की गाड़ी ऐसे चलती होगी?



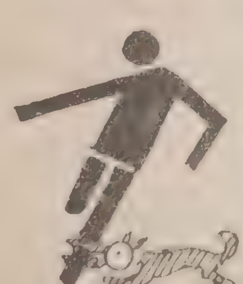
वेटलिफ्टिंग

चक्कर आ रहे हैं।



तीरन्दाजी

ट्रांजिस्टर लगाओ और प्रेमिका पर "तेरा तीर ओ बेपीर" चलाओ।



फुटबाल

फुटबालर को पागल कुत्ता काट खाये तो पागल कुत्ता 'आफ साइड' माना जाये या नहीं।



बाक्सिंग

दिवाला पिट जाये तो भीख मांगने की प्रेक्टिस

बाजी

हुकम चन्द 'पक्षी'

शिब्बन और बच्चन एक ही गुरु के शिष्य थे। जब उन्होंने कई स्कूल और कालेज फेल कर दिये तो हारकर उनके माता-पिता ने उन दोनों को घटोरन गुरु के गुरुकुल में भेज दिया। जिस दिन गुरु की सेवा में उनका सिर मुंडवाया गया, तो वे अपने बालों को देखकर खूब रोए। घटोरन की घुटी हुई चांद और बीच में भैंस की पूंछ जैसी मोटी चोटी, ढोल सा पेट और उस पर ओउम् का निशान—ये था उनका हुलिया। शिब्बन और बच्चन दोनों सुबह उठते. और गुरुजी के लिए सुलपा भरते, भंग घोटते और पूजा के लिए धतूरे के फूल तोड़ कर लाते। उधर धूप चढ़ जाती और इधर घटोरन का नशा जोरों पर चढ़ जाता और गालियों का कीर्तन शुरू हो जाता। जिसे दोनों शिष्य गुरु की वाणी समझ ध्यान में रखते जाते और फिर रात को वही वाणी घटोरन को रट कर सुनाते। दोपहर को हलवा, खीर, आम, केला, शहद, मुरब्बा और विभिन्न प्रकार की चटनी का ह्रस्व भोजन करके गुरु जी गद्दों पर लेट जाते तब शिब्बन उनकी चमचागीरी किया करता, और बच्चन राजनैतिक भ्रष्टाचार के जासूसी उपन्यास सुनाया करता।

इस प्रकार गुरु की सेवा करते-करते वर्षों बीत गये। घटोरन ने उन्हें पुस्तकीय ज्ञान के अतिरिक्त व्यावहारिक ज्ञान भी सिखाया। तिकड़म, संसार के छल-छिद्र और दिन-दहाड़े जनता का उल्लू बनाना, ये सब विद्यायें दोनों शिष्यों ने बड़ी लग्न से सीखीं। आखिर उनकी शिक्षा समाप्त हुई। घटोरन ने उन दोनों को अपने पास बुलाया और कहा—'देखो ! बच्चो, तुमने मेरी बड़ी सेवा की है। जाओ, आज से सांसरिक सुख भोगो।'

'मगर गुरु देव। हममें से आपका सबसे प्यारा और सर्वश्रेष्ठ शिष्य कौन-सा है?'

दोनों एक साथ बोले।

घटोरन गुरु सोच में पड़ गये। बोले—'बच्चो ! बड़ा टेढ़ा प्रश्न पूछा है तुम लोगों ने मगर जवाब तो देना ही है। अब से बाद में मेरे सामने तुममें



से जो भी सबसे भ्रष्ट और पापी बनकर सबसे पहले मेरे सामने आयेगा, वही मेरा प्यारा और सर्वश्रेष्ठ शिष्य होगा।'

गुरु जी ने इतना कहकर दोनों को विदा किया।

अब तो दोनों का मस्तिष्क चक्कर काटने लगा।

घटोरन गुरु की यह परीक्षा तो अद्वितीय और अनोखी थी। सोचते-सोचते दोनों शहर में आ गये। शाम तक जलवे देखे मगर अब पेट में चूहे उछल-कूद मचाने लगे थे। दोनों के सर घुटे हुए, कानों में कुण्डल और हाथों में डंडा। देख-भाल कर एक वैष्णव होटल में विराजमान हो गये। मगर ये क्या ! वहां तो अण्डों की टोकरियां लटक रही थीं। दोनों शाकाहारी थे। अतः धर्म संकट में पड़ गये। तब बच्चन बोला—'अरे ! शिब्बन घबराता क्यों है रे ! आखिर तो हमें भ्रष्ट बनना है सटक जा साबुत अण्डे और हां देख एक-एक मुर्गा भी मंगवा ली जो हां।'

बस फिर क्या था टूट पड़े दोनों मुर्गे पर। भर पेट भोजन किया। अण्डे इतने खाये कि पेट भी तरबूज जैसा फूल गया। बेयरे ने बिल रखा तो दोनों को दिन में चांद-तारे नजर पड़ने लगे। पूरा चालीस रुपये, अस्सी पैसे का बिल था। जेब में तो अठन्नी पड़ी थी। आखिर तो वे घटोरन के घुटे हुए शिष्य थे। शिब्बन पेट पर हाथ फेरते हुए बोला—'क्यों साहब, आपके पास छुट्टा हो जायेगा या नहीं, हमारे पास एक हजार का नोट है?'

सर घुटे हुए दो मुस्टन्डे और एक हजार का नोट !! मालिक उनकी सूरत देखने लगा और बोला—'क्यों साहब किस देश के रहने वाले हो,तुम्हें पता

नहीं कि एक हजार का नोट सरकार ने बन्द कर दिया है।

अब तो दोनों की सिट्टी-पिट्टी गुम। पहले ही दाव पर सारी विद्या टांय-टांय-फिश्श हो गयी। मगर कुछ तो करना था। अतः बच्चन झट से बोला—'भाई हम तो पूरे जंगल के रहने वाले हैं। यहां शहर में एक मेमना बेचने आये थे। पूरे एक हजार की बेची थी। उसी ने यह नोट हमको दे दिया।'

'कहीं रब्बू कसाई तो नहीं वह बड़ी-बड़ी मूंछों वाला', मालिक ने पूछ लिया।

'हां-हां साहब!! वही कसाई। हम तो लुट गये राम कसम! हमें उसके घर तक लिवा ले चलो साहब! बड़ी मेहरबानी होगी।' दोनों एक साथ कह उठे।

रब्बू का घर पास ही था। मालिक ने उनके साथ अपना एक नौकर भेज दिया और दस रुपये कुछ सामान लाने को दे दिये। थोड़ी दूर जाकर बच्चन ने नौकर से कहा—'जा भाई आगे हमें रब्बू कसाई का घर मालूम है और ये दस का नोट हमें देता जा।'

दोनों ने बलपूर्वक नौकर से दस का नोट छीन लिया और रफूचक्कर हो गये।

इसी प्रकार दोनों मित्रों को दुनिया में घूमते हुए काफी दिन बीत गये। अभी तक पूर्ण रूप से कोई भ्रष्ट और पापी नहीं बन सका था।

एक दिन दोनों सराय में ठहरे हुए थे कि एक औरत उनके पास आकर ठहर गयी। वह बहुत मुसीबत में थी। रात को जब उसकी आंख लग गयीं तो चुपके से बच्चन ने उसके कानों के कुण्डल और हाथ की चूड़ियां उतार लीं। सुबह जब औरत ने रोना-पीटना किया तो बच्चन ने शिब्बन का नाम ले दिया। पुलिस शिब्बन को पकड़ कर ले गई। शिब्बन ने जब पुलिस से छूटना चाहा तो हवलदार ने घूंस मांगी। हवलदार बोला--'कुछ नजराना है छूटने के लिए।'

शिब्बन को आस बंधी। बोला—'हां साहब: एक दस का नोट पड़ा है।'

शिब्बन की जेब में होटल के नौकर से छीना हुआ नोट पड़ा था। मगर जेब में हाथ डाला तो सन्न रह गया। वह नोट बच्चन ने रात को ही साफ कर दिया था। शिब्बन जेल में पड़ा-पड़ा यही सोच रहा था कि बच्चन मुझसे ज्यादा पापी बन गया होगा। हे भगवान! ये तूने क्या किया! इस तरह तो मैं परीक्षा में फेल हो जाऊंगा। खैर भगवान सबकी सुनता है। जेल में ही शिब्बन की मुलाकात एक चोर से हुई। उसने सुना था कि चोरी करना पाप है और चोर एक पापी है। बस उसने चोर की पूंछ पकड़ ली। जब शिब्बन जेल से छूटा तो चोर के साथ चोरी करने लगा। चोरों के भी कुछ नियम थे। वो चांदनी रात में चोरी नहीं करते थे। जब वो लोग किसी के घर घुस जाते और सगुन न बनता तो वापस लौट पड़ते। वो सब कुछ चुराते मगर औरत के गले, नाक तथा कान की चीजें न चुराते। जब एक दिन शिब्बन ने चोरों से अपना प्रयोजन बताया तो चोरों के सरदार ने कहा---'अरे बावले! भ्रष्ट और पापी इन्सान को तू चोरों में ढूंढ़ता है। भ्रष्ट इन्सान का कोई नियम नहीं होता और हमारे नियम हैं। जा कहीं और भ्रष्ट इन्सान को ढूंढ़ना। हमारी संगत में तू भ्रष्ट नहीं हो सकता।

शिब्बन सोचता रहा। शास्त्रों में पढ़ा था कि शराब पीने से व्यक्ति पतित और भ्रष्ट हो जाता है। अतः उसने सोचा क्यों न मैं प्याले पर प्याले पी डालूं। मगर शीघ्र ही उसके अन्तः-करण ने उसे बताया····'अरे पगले: शराब तो हमारे महान नेता पीते हैं! नहीं-नहीं इससे तू भ्रष्ट नहीं हो सकता है।'

इसी तरह वह सोचता हुआ एक गली से गुजर रहा था, तो उसने देखा कि एक व्यक्ति पर बहुत से लोग लात-घूंसे, चप्पल बरसा रहे हैं। शिब्बन ने पता किया। मामला जेब काटने का था। वह व्यक्ति कह रहा था—'अरे! भाईयों जरा सुनो तो! आजकल कौन जेब नहीं काटता है। बड़े-बड़े लोग कुर्सी पर बैठकर जब जनता की जेब काट रहे हैं तो उन्हें फूलों की माला मिलती है। मगर मुझे ये सब मिल रहा है आखिर क्यों?'

शिब्बन ने उस व्यक्ति को जिसका

बन्द करो बकवास



नाम घोटू था बचा लिया और पब्लिक से कहने लगा—'भाईयों जेब काटना भी एक कला है। हमें कला की कद्र करनी चाहिए। तुम लोगों ने घोटू को इसलिए नहीं पीटा कि वह पाकेट मार है बल्कि इसलिए पीटा की वह अपनी कला में अभी कच्चा है।'

अब शिव्बन घोटू के साथ जेब काटने का धन्धा करने लगा। आये दिन दोनों सरे बाजार में चप्पल, जूते और गालियां खाने लगे। शिव्बन रात को जब घोटू का सूजा हुआ शरीर सेंकता तो अक्सर सोचा करता कि भ्रष्ट और पापी तो आजकल कोठियों और बंगले में रहते हैं और उनका स्वागत तो जनता फूलों की माला या अधिक से अधिक काले झंडों से करती है। मगर मेरा और घोटू का स्वागत तो चप्पल और जूतियों से होता है। तो क्या घोटू भ्रष्ट और पापी नहीं है? उसने अपने आप से प्रश्न किया। राम! राम! हम तो गलत लाइन पर जा रहे हैं। शिव्बन उस दिन से असमंजस में रहने लगा। एक दिन शाम तक दोनों सड़कों पर बाबूओं की जेबों को ललचायी दृष्टि से देखते रहे मगर जुगत न बैठी। घोटू बार-बार एक व्यक्ति के पीछे जाता और वापस लौट आता। शिव्बन ने इस व्यवहार का कारण पूछा—तो घोटू ने बताया—'शिव्बन इस व्यक्ति की जेब में पांच सौ रुपये हैं मगर मैं इसकी जेब नहीं काट सकता।'

'आखिर क्यों?' शिव्बन आश्चर्य से घोटू को घूरने लगा।

'तू नहीं जानता शिव्बन, यह व्यक्ति विपदाओं का मारा हुआ है। सूखा में इसकी फसल नष्ट हो गयी है। सरकारी लोग कुर्सियों पर आंखें खोये बैठे हैं और उन्होंने इस बेचारे का लगान माफ नहीं किया है। यह कर्जा लेकर लगान अदा करने जा रहा है। यदि मैंने इसकी जेब काट ली तो सरकारी लोग बिना कुर्की किये इसे नहीं बख्शेंगे। इसका परिवार भूखा मर जायेगा। इसके मासूम बच्चों की आत्मा मुझे बद्दुआ देगी।'

कहते-कहते घोटू का गला भर आया।

'आत्मा! बद्दुआ! ये तुम क्या सोचने लगे घोटू?' शिव्बन ने पूछा।

'हां! शिव्बन! मैं जानता हूं कि गम और अभाव किस तरह आदमी को निगल जाते हैं।'

उस दिन सारी रात वे दोनों भूखे पड़े जागते रहे। शिव्बन का मन सारी रात अन्तर्द्वन्द्व में डूबा रहा। उसे कुछ-कुछ घोटू के भ्रष्ट और नीच होने पर शक होने लगा था। उसने घोटू का साथ छोड़ने का निश्चय कर लिया। मगर इसी बीच घोटू बीमार पड़ गया।

★ ★ ★

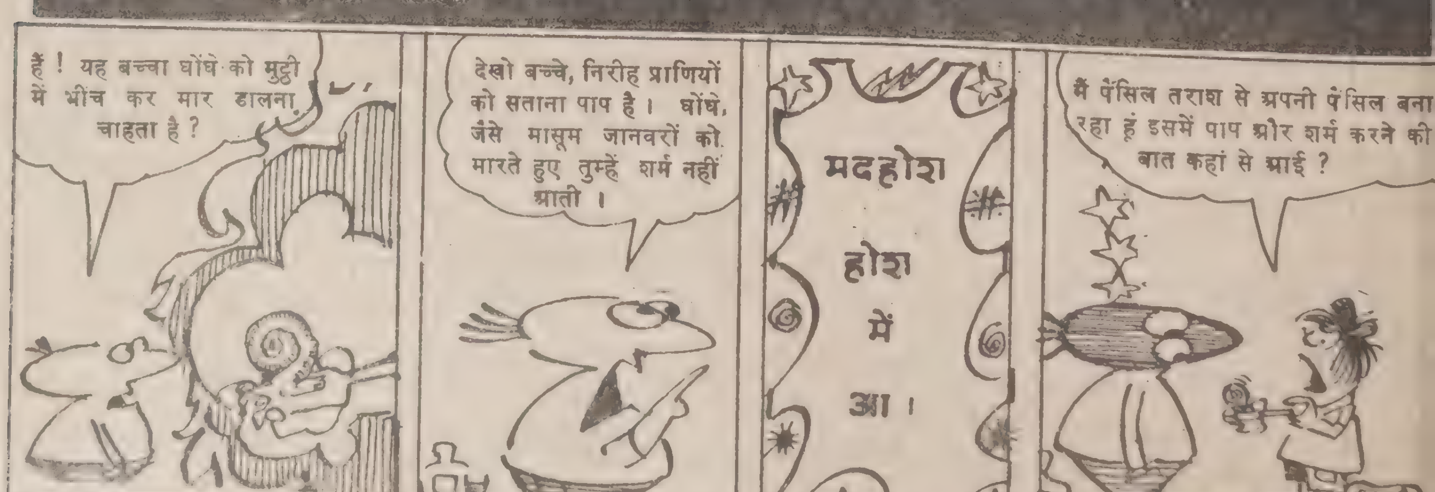
उधर बच्चन को घूमते-घूमते कई महीने हो गये वह किसी भ्रष्ट और नी[...] गुरु की तलाश में था, जो उसक[...] कम्पटीशन की तैयारी करा सके। उस[...] कई महीने तक इस प्रकार के गुरु क[...] तलाश किया, मगर ऐसा गुरु उसे तलाश[...] करने पर भी नहीं मिल सका। एक[...] दिन जब वह काफी परेशान सड़क प[र] खड़ा था तो एक हीरो उसे वहां टकर[ा] गया। हीरो ने जब बच्चन की परेशानी का कारण सुना तो उसने कहा—'बस इतनी सी बात के लिये आप परेशान हैं। आप इनके साथ चले जाइये।' हीरो ने सड़क पर भीड़ के साथ जाते हुए व्यक्ति की ओर इशारा किया। उस व्यक्ति के पास टेढ़ी मूठ की छड़ी थी खद्दर का कुर्ता, गांधी टोपी, खादी थैल[ा] और आंखों पर काला चश्मा बच्चन ने उसकी चाल देखी लगता था कोई उद्घाटन करके आ रहे हैं बच्चन ने हीरो से कहा—'भाई क्यों मजाक करते हो? आपको मेरी बातें मजाक लगती हैं? सचमुच मुझे एक भ्रष्ट और नीच गुरु की तलाश है।'

हीरो ने मुस्करा कर कहा—'भाई साहब इनसे अच्छा गुरु इस काम के लिए और कोई नहीं है। आगे आपकी मर्जी है।'

हीरो चला गया मगर बच्चन को सोचने पर मजबूर कर गया।

शाम तक तो बच्चन गुरु की खोज में लगा रहा मगर अब उसे पेट की

मदहोश



आग ने सता दिया था। अतः वह रोटी के जुगाड़ में निकल पड़ा। रात को एक सभा थी। वहां लोगों ने गधे पर कुरान रख दी थी। एक अंगूठा छाप मदारी को सभा का मुख्यातिथि बना दिया था। बच्चन बचपन से ही भौंकना अच्छा जानता था अतः रोटी और मुफ्त की चाय पर अतिथि जी ने उसे अपने यहां डेली-वेजेज पर रख लिया। जिस दिन कुछ ज्यादा भौंकना पड़े उस दिन चंदे के रुपये में से शराब पीनी पगार तय हो गयी। शीघ्र ही लोगों का ध्यान बच्चन के भौंकने पर जम गया। कुछ ही दिनों में वह भौंकने में इतना माहिर हो गया कि खुद भौंकने वालों को ही काटने लगा। एक दिन धार्मिक नेता पाखण्डी लाल की नजर बच्चन पर पड़ गयी। बस फिर क्या था उन्होंने उसे अपनी तोड़-फोड़ कमेटी का ब्लाइंड चीफ बना दिया। इस प्रकार देखते ही देखते बच्चन जनता का धार्मिक नेता बन बैठा। धार्मिक धन्धों में उसने पाखण्डी को भी कहीं पीछे छोड़ दिया। अब तो वह अयातुल्ला खुमैनी की तरह सत्ता हथियाने के सपने देखने लगा। जिस छोटे से शहर में बच्चन रह रहा था। वहां पर काफी दिनों से एक जगह को लेकर हिन्दू और मुसलमानों में विवाद चल रहा था। मुसलमान कहते थे कि यह जगह हमारी है जबकि हिंदुओं का दावा था कि यह जगह हमारी है। बच्चन ने चमकने का यह अच्छा अवसर देखा और हाथ में गीता की एक प्रति लेकर हिन्दुओं को जा उकसाया। उसने मन्दिर के महन्त से कहा—'दादा, यह भूमि जिसको मुसलमान अपनी बता रहे हैं यह वो जगह है जहां द्वापर में कृष्ण ने गऊयें चराईं थीं। यहां बहुत पुरानी एक बांसुरी मिली है। अवश्य ही यह बांसुरी वासुदेव कृष्ण की है। यहां हमारा मंदिर बनेगा। यदि यहां मस्जिद बनी, तो यह सरासर हिन्दुओं का अपमान होगा।'

धर्म का बहाव बड़ा तेज होता है। इसमें बहने वाले प्रायः आंखों से नहीं देखते। हिन्दुओं की एक संघर्ष समिति बनाई गयी। वे मरने मारने को तैयार हो गये। बच्चन को मन्दिर निर्माण सभा का अध्यक्ष बनाया गया। धड़ाधड़ चंदा इकट्ठा होने लगा। बच्चन के पास हजारों रुपये धरोहर के रूप में हो गये। अब बच्चन सोचने लगे कि चंदे को हजम कैसे किया जाये। ऐसा चूर्ण वैद्यजी के भी पास नहीं था। मगर बच्चन ने कच्ची गोलियां नहीं खेली थीं। शकुनि जैसे कई मामाओं का आशीर्वाद उसे प्राप्त था। उसने काष्ठ की बहुत ही जर्जर और पुरानी पेटिका ली और उस पर उर्दु में ऐसा कुछ खुदवा लिया जो दूर-बीन से भी पढ़ा न जा सके। पेटिका में फटे-पुराने कुरान के दो-तीन सफे रख लिये और चुपके से रात को इमाम के पास पहुंच गया और बोला—'इमाम साहब ! मुसलमानों पर खुदा का फजल हो गया है। मसला हल हो गया है ये देखो !!'

बच्चन ने कुरान के जर्जर सफे और दीमक लगी पेटिका इमाम को दिखलायी।

'ये क्या है !?' इमाम ने आश्चर्य से पूछा।

'हुजूर !! ये उस जगह में दबी हुई मिली हैं जिसे हिन्दू अपनी बता रहे हैं। आपको शायद पता नहीं कि शेरशाह सूरी से जंग के दौरान शहंशाह बाबर ने इस जगह पर बैठकर कुरान पढ़ी थी। ये सफे उसी कुरान के हैं। बाबर की भूमि हिन्दुओं की कभी हो सकती।'

'लाहौल बिला !! ये कैसे हो सकता है। हम खून की होली बहा सकते हैं मगर अपने सरताज-कायदे आजम की इबादत गाह पर हिन्दुओं को पूजा नहीं करने देंगे।'

बस फिर क्या था। बच्चन की करतूतें रंग लाईं और देखते-ही-देखते हिन्दु-मुसलमान एक-दूसरे के खून के प्यासे हो गये। सचमुच देश में खून की होली खेली जाने लगी। न वहां मंदिर बना और न मस्जिद बल्कि लाशों से सजा और गिद्धों से घिरा कब्रिस्तान बन गया। शहर में चारों तरफ लूटमार और हत्यायें होने लगीं। चारों तरफ कहर-सा छा गया। ऐसे ही माहौल में घोटू बीमार पड़ा था। शिब्बन इसी लिए उसे छोड़कर नहीं जा सका था। उस दिन शहर में कर्फ्यू और मार्शल ला लगा हुआ था। बीमार घोटू जब काम पर जाने लगा तो शिब्बन ने उसे समझाया—'कहां जाते हो घोटू।

जान-बूझकर जान देने पर तुले हो। शहर में कत्ले आम मचा हुआ है। मारे जाओगे।'

घोटू की आंखें जोश से चमकने लगीं। बोला—'शिब्बन आज मेरे गुरु का श्राद्ध है। जिसने मुझे जेब काटने की कला सिखाई आज मैं उसकी आत्मा की शान्ति के लिए जेब काटने को अवश्य जाऊंगा। जान की मुझे परवाह नहीं है क्योंकि गुरु से महान् इस दुनिया में कोई नहीं है।'

शिब्बन ने घोटू को बहुत समझाया मगर वह अपने दृढ़ निश्चय पर डटा रहा। उस दिन रात को जब वह लौटा तो बुरी तरह लहू-लुहान था। जगह-जगह घाव हो गये थे। आज केवल उसे पांच रुपये ही पल्ले पड़े थे मगर उसने गुरु की आत्मा को शान्ति पहुंचाई थी। शिब्बन ने दुखी मन से घोटू से विदा ली—'अच्छा मित्र विदा का समय आ पहुंचा है !'

'क्या मतलब है ? ।' घोटू ने चौंकते हुए पूछा।

'तुम भले ही जेबें कतरे सही मगर भ्रष्ट और पापी नहीं ही सकते। परीक्षा की तैयारी के लिए मुझे अब कहीं जाना होगा।'

और इस तरह शिब्बन फिर अपनी मंजिल की तलाश में निकल पड़ा।

★ ★ ★

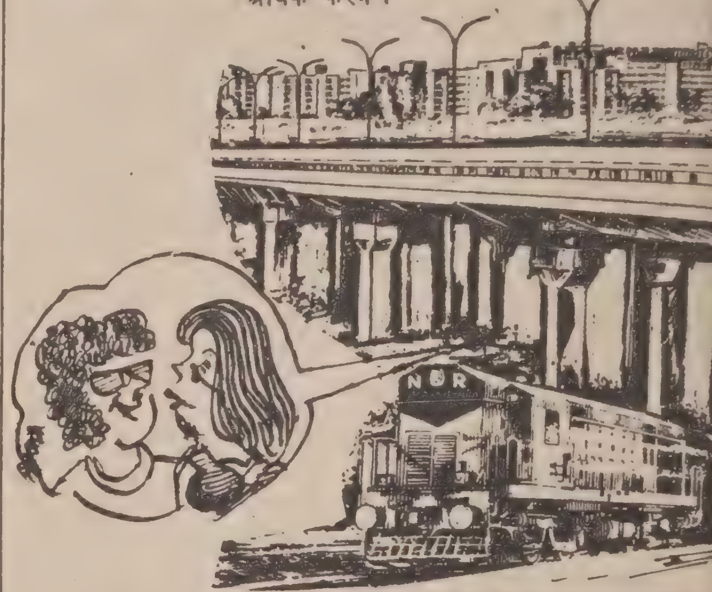
उधर तो देश की शान्ति भंग हो गयी। मन्दिर में पुजारियों का खून और मस्जिद में मुल्लाओं की लाशें। चारों तरफ लुटमार थी। इधर बच्चन चंदे की सारी रकम डकार गया और भविष्य के कार्यक्रम बनाने में जुट गया। जब कुछ दिन बाद सरकार ने देश की अस्तव्यस्त व्यवस्था पर काबू पाया तो बाद में बच्चन के जगह-जगह भाषण हुए—'भाइयों हमारे भारतवासी कितने गिर चुके हैं !! भूमि के टुकड़े के लिए

एशियाई खेलों का

प्रेमलीला पर प्रभाव

आप कहेंगे कि प्रेम का एशियाई खेलों से क्या ताल्लुक है ? है जनाब ! यह खेल रोमान्स के स्टायल पर क्रांतिकारी प्रभाव डालेंगे ।

फ्लाई ओवरों के नीचे इश्क लड़ाने के लिये एकांत जगहें मिलेंगी । फ्लाई ओवरों के निकट रहने वाले युवक प्रेम अधिक करेंगे ।





प्रेमिकायें प्रेमियों पर शादी के लिये ज्यादा जोर डालेंगी । खेल स्टेडियमों की गोलाई उन्हें सगाई की अंगूठी की याद दिलाती रहेगी ।

रंगीन टी. वी. प्रेम के दावेदारों का फैसला करेगा ।



एशियाई खेलों का टिकट लेकर प्रेमी प्रेमिका पर अच्छा प्रभाव डालेगा । टिकट लेकर वह यह सिद्ध कर सकता है कि शादी के बाद मिट्टी का तेल, चीनी आदि चीजें लाकर दे सकता है । उसमें इतना तिकड़म लड़ाने का दम है ।



दिल्ली में इतने पांच सितारे वाले होटल बन रहे हैं । प्रेमिकायें प्रेमियों से उनमें ले जाने की जिद करेंगी । बिल पे करते-करते प्रेमियों के बाल जल्दी-जल्दी सफेद हुआ करेंगे ।




प्रेमी लोग हस्पतालों में ज्यादा नजर आयेंगे। वे अपनी मह-बूबाओं पर रौब डालने के लिये पार्कों में वही करतब दिखाने की कोशिश करेंगे जो जिमनास्टिक में चीनी व जापानी जिमनास्ट करेंगे। फलस्वरूप हाथ-पैर तुड़वायेंगे।
ड्राइविंग में पहले वाला मजा नहीं रहेगा। फ्लाई ओवरों के कारण ट्रैफिक फ्लो स्मूथ होगा। पहले वाले धक्के नहीं लगेंगे। पहले चौराहों पर ब्रेकों और मोड़ने के अवसरों पर एक दूसरे की गोद में गिरने का बहाना मिला करता था।
लड़कियां खेलों में अपनी रुचि दर्शाने के प्रयास में अपनी मूर्खता प्रगट करके प्रेमी की नजरों मे गिरेंगी।
कल मैंने बैडमिन्टन मैच देखा बड़ा मजा आया। सुनील-गावस्कर ने पांच गोल किये।
फ्लाई ओवरों के सामने के मकानों की ऊपरली मंजिल की लड़कियों को फ्लाई ओवर प्रेमी मिलेंगे जो फ्लाई ओवरों पर खड़े होकर उनसे आंख मटक्का करेंगे।
लड़कियों को निराशावादी प्रेमी अधिक मिलेंगे। खेलों के टिकट प्राप्त न करनें वाले निराशावादी बनेंगे।
यह दुनिया मेरे काम की नहीं—मेरे काम की नहीं।
दिल्ली मे खेलों के दौरान ब्रेड, घी, दूध सब्जी की कमी होगी। खुराक कम होने के कारण प्रेमियों को प्रेमिकायें ज्यादा अच्छी लगेंगी, मोटापा खत्म हो गया होगा।

क्यों और कैसे

प्र० : हम हंसते क्यों हैं ?

उ० : हम अपनी खुशी या मनोरंजन का इजहार करने के लिये हंसते है। वास्तव में हंसी या मुस्कान ऐसी भावना है जिसके साथ हम जन्म ही लेते हैं क्योंकि देखा गया है कि नवजात शिशु जन्म के पहले सप्ताह में भी मुस्कुराते हैं।

चार्लस डारविन एक बहुत बड़े अंग्रेज प्राकृतिकज्ञ ने इस प्रकार की ओरगेनिक थ्योरी को प्रमाणित कर दिया है उन्होंने चेहरे के हाव भावों का अध्ययन कर इस विषय पर एक किताब भी लिखी है जिसमें मुस्कान के विषय में लिखा है।

ऐसा कहा गया है कि बच्चा अपने जन्म के एक वर्ष के भीतर ही समझने लगता है कि मुस्कान एक अच्छा इजहार है क्योंकि मुस्कान का मां या नर्स दोनों ही प्रसन्न हो स्वागत करती हैं।

मुस्कान जन्म के बीस सप्ताह में पूर्ण विकसित हो जाती है और हंसी का रूप ले लेती है परन्तु अलग-अलग लोगों के हंसने और मुस्कुराने में बड़ा ही अन्तर होता है। कोई व्यक्ति अधिक जल्दी मुस्कुराते और हंसते हैं जबकि कुछ लोग हंसने में काफी समय लगा देते हैं।

जैसे-जैसे बच्चा बड़ा होता है उसका मुस्कुराना और हंसना भी आस-पास के सामाजिक माहौल से प्रभावित होता जाता है क्योंकि उसे इसका ज्ञान होने लगता है कि किस समय कैसा व्यवहार करना है। बड़े लोगों में यह पता लगा पाना कठिन होता है कि उनकी हंसी वास्तविक खुशी का इजहार है या दिखावटी है। हाल ही में तरह-तरह की मुस्कानों का भी अध्ययन किया गया है। यह ध्यान देने की बात है, मुस्कान का रूप अलग-अलग स्थिति में भिन्न-भिन्न रूप लेता है, हंसी के जोर के ठहाके से लेकर, मुंह दबा कर मुस्कुरा कर दिखाना, जिससे खुशी का कम और डर का इजहार ज्यादा होता है। जीवन में वैसे मुस्कान का बहुत महत्व है। सदा मुस्कुराते रहने वाले व्यक्ति का साथ हर कोई चाहता है। साथ ही कहा गया है, हंसी संसार की सबसे उत्तम औषधि है।

प्र० : कुछ लोग गंजे क्यों हो जाते हैं ?

उ० : गंजे होने के दो कारण हो सकते हैं, जीवित बाल जर्म सेन्टर या तो बिल्कुल नष्ट हो गये हैं या कुछ समय के लिये उन्हें नुकसान पहुंचा है।

स्थायी गंजापन लगभग 40 प्रतिशत पुरुषों में हो जाता है जो अक्सर सारे सिर पर हो जाता है। स्त्रियों में यह केवल सिर के ऊपरी भाग में ही होता है और इससे कभी भी पुरुषों के समान सारे बाल नहीं गिरते।

अक्सर पूरा गंजापन तीन कारणों से होता है, आनुवंशिकता, आयु और होरमोन संतुलन, इसका कोई इलाज नहीं है। इसके अतिरिक्त सिर पर गम्भीर चोट और बीमारी के कारण भी स्थायी गंजापन हो जाता है क्योंकि चोट से बाल के जर्म को भारी चोट पहुंच जाती है तथा बीमारी से बाल के जर्म सेन्टर रसायनों से नष्ट हो जाते हैं।

तेज बुखार, टायफाइड और टी. बी. जैसी बीमारियों के बाद भी कुछ समय के लिये सिर के बाल गिर जाते हैं परन्तु बीमारी ठीक होने पर अधिकतर दुबारा उग आते हैं।

नशीली वस्तुयें, एक्स-रे, असंतुलित आहार, और कुछ त्वचा रोगों के कारण भी कुछ समय के लिए बाल गिर जाते हैं पर ज्यादातर एक वर्ष के भीतर ही दुबारा उग आते हैं।

एक और रोग है जिसे गंज का रोग कहते हैं। इस रोग के दौरान सिर के बाल जगह-जगह से चकतों में उड़ जाते हैं अधिकतर इस रोग में बाल के जर्म कुछ देर के लिए हानि ग्रस्त हुए होते हैं। और 99 प्रतिशत मामलों में बाल किसी भी इलाज के बिना स्वयं दुबारा उग आते हैं।

गंजापन जीवन में बचपन के बाद कभी भी हो सकता है। आधुनिक वैज्ञानिकों ने पूर्ण गंजेपन का इलाज खोज निकाला है जो औषधि खाकर नहीं, वरन् सिर पर बाल लगवा कर किया जा सकता है। इसमें डाक्टर सिर पर घास के समान नये बाल लगा देता है और कुछ समय बाद सिर पर प्राकृतिक बालों के समान ही बाल उगने लगते हैं।

प्र० : 'ब्रेड' (डबल रोटी) में छेद क्यों होते हैं ?

उ. : ब्रेड के टुकड़े में छेद से गैस के बुलबुले के कारण बनते हैं। ब्रेड बनाने के लिये आटा, पानी मिलाकर गूंदा जाता है जिसमें थोड़ा सा 'यीस्ट' खमीर मिलाया जाता है। 'यीस्ट' एक प्रकार का ऐसा 'फंगस' है जो गरम और नम होने पर बहुत ही तेजी से बढ़ता है। विकास के दौरान यह फंगस गैस छोड़ती है जिसके बुलबुलों के कारण ब्रेड का आटा फूलता है। यीस्ट के ही कारण ब्रेड हल्की बनती है साथ ही उसकी सुगन्ध भी उसी की वजह से आती है।

इस बात का किसी को भी पता नहीं कि सबसे पहले ब्रेड बनाने में यीस्ट का प्रयोग कब आरम्भ हुआ था परन्तु हुआ होगा हजारों वर्ष पहले ही। एक प्राचीन कथा के अनुसार इसकी खोज अचानक ही हो गई थी। कहा जाता है कि कुछ खमीर आटे में स्वयं प्रवेश कर गया और आटे को फुला दिया। इस आटे से बनी ब्रेड साधारण ब्रेड से दुगनी मोटी बनी, लोगों ने इसे जादू समझा पर क्योंकि यह ब्रेड दूसरी फ्लेट ब्रेड से अधिक हल्की और स्वादिष्ट थी, लोगों ने यीस्ट का प्रयोग शुरू कर दिया।

क्यों और कैसे ?
दीवाना पाक्षिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

खेल खेल में

एशियाई खेलों के लिये निर्माण एक झलक

वैसे तो एशियाई खेलों के लिये निर्माण कार्यों में दिल्ली में बन रहे सात फ्लाई ओवर, सड़कों को चौड़ा करने तथा सफाई आदि भी शामिल हैं लेकिन सीधे खेलों से सम्बन्धित निर्माणों में जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम, इन्दप्रस्थ स्टेडियम, नेशनल स्टेडियम में आॅस्ट्रो-





टर्फ बिछाया जाना, खेल गांव, साईकिल वेलोड्रोम, तुगलकाबाद में शूटिंग रेंज तथा तालकटोरा का स्विमिंग पूल है। इनमें से कुछ के परिचय यहां पेश हैं बाकी अगले अंकों में दिये जायेंगे।

तालकटोरा स्विमिंग पूल

ताल कटोरा स्विमिंग पूल विश्व स्तर का अति आधुनिक तरणताल होगा। पहले छत की भी योजना थी परन्तु डिजायन में कुछ खराबी के कारण छत का विचार छोड़ना पड़ा। पूल का पानी विशेष बायलरों द्वारा 24 डिग्री सेंटीग्रेड पर नियन्त्रित रहेगा।

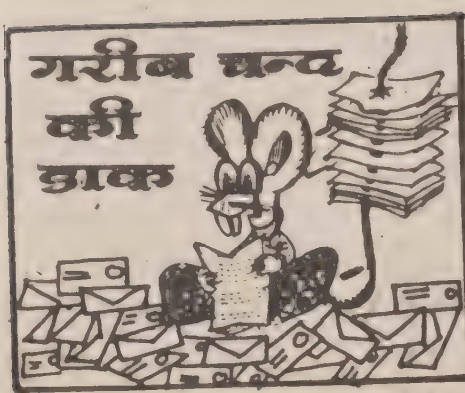


इन्द्रप्रस्थ इनडोर स्टेडियम

इन्द्रप्रस्थ स्टेडियम में बैडमिंटन, जिमनास्टिक्स और वालीबाल के खेल होंगे। इसका डिजायन अनूठा है। उल्टी कटोरी के आकार का स्टेडियम आठ विशाल स्तम्भों पर टिका है। अपने तरह का यह पहला और आकार में विश्व में तीसरा सबसे बड़ा है। यहां 25000 दर्शकों के बैठने की व्यवस्था है। मुख्य हाल को आवश्यकता अनुसार दो भागों में बांटा जा सकता है। बीच में फोल्डिंग पार्टीशन है जिसे उठाने पर हाल दो भागों में विभाजित हो जाता है और एक भाग की आवाज दूसरे भाग में नहीं जाती। पार्टीशन उठाने में केवल 10 मिनट लगेंगे।

खेल गांव

एशियाई खेल गांव दक्षिण दिल्ली में 155 एकड़ क्षेत्र में फैला है। गांव का डिजायन बिल्कुल भारतीय गांव का है लेकिन सुख सुविधायें आधुनिक हैं। गांव में देश का सबसे बड़ा सांस्कृतिक केन्द्र होगा जिसमें 25000 दर्शकों के बैठने की व्यवस्था होगी। गांव में पानी का टैंक भी अनोखा है। इसमें चारों ओर 53 मीटर की ऊंचाई पर दृष्यावलोकन गैलरी होगी जो देश में सबसे ऊंचा होगा। गांव का मेस व किचन भी देश में सबसे बड़ा होगा।



राजीव, शरद कुमार श्रीवास्तव—जौनपुर
हम गरीब चन्द जी से पूछना चाहते हैं कि जब कोई लड़का किसी लड़की के साथ प्यार करने के बाद छोड़ देता है तो समाज उसे बेवफा कहता है, परन्तु अगर लड़की साथ छोड़ दे तो समाज उससे कुछ क्यों नहीं कहता है ?
उ० : क्योंकि लड़की के छोड़ने के बाद लड़का देवदास बन जाता है और समाज को मुफ्त में तमाशा देखने को मिल जाता है। तमाशे का सामान तैयार करने वाले से समाज भला क्यों सख्त हो ?

नरेन्द्र निन्दी—कपूरथला : अगर अचानक आपके सामने भगवान आ जायें तो आप उनसे क्या मांगेंगे ?
उ० : आइडेन्टिटी कार्ड। आजकल बहुरुपिये, ठग बहुत मिलते हैं।

वेद प्रकाश तंवर—दिल्ली : गरीब चन्द जी, क्या बिल्ली मौसी को आपकी याद नहीं आती ?
उ० : मैंने बिल्ली से कौन से पैसे उधार ले रखे हैं जो उसे मेरी याद आयेगी।

प्रहलाद बसवानी, कृष्ण कन्हैयामण्डला : गरीब चन्दजी, इन्सान अमीर होकर भी खुश क्यों नहीं होता ?
उ० : खुश तो होता है लेकिन दिखाने के लिए मायूसी का नाटक करता है गरीबों को उल्लू बनाने के लिये।

राजेश कुमार चुघ, सिरसा (हरियाणा) : श्री गरीब चन्द जी, मैं आपको अपना सैक्रेटरी रखना चाहता हूं। तनख्वाह भी अन्य सैक्रेटरियों से डबल दूंगा। क्या आप मेरे सैक्रेटरी बनना पसन्द करेंगे।
उ० : क्यों मुझ पर कीमती तनख्वाह लुटाने पर तुले हो ? किसी हसीना को रखो सैक्रेटरी।

राजेश अरोड़ा 'बबलू', जोधपुर : गरीब चन्द जी, हमारे शहर में बाढ़ के कारण आपकी बिरादरी के बहुत से साथी बह गये हैं। बाकी बचे हुए परिवारों के लिए तो कुछ कीजिये।
उ० : कर तो रहा हूं। उनकी सेहत का जाम पी रहा हूं। चीयर्स ?

मधुकर निलकंठराव घुटे, धुलिया : गरीब चन्द जी, शादी के बाद लड़कियां अपने पति पर दबाव क्यों डालती हैं ?
उ० : प्रेशर कुकर में खाना बनाने की ट्रेनिंग के लिए यह पूर्वाभ्यास है।

प्रेम बाबू शर्मा, बगीची पीरजी : गरीब चन्द जी, शराबी का अन्त क्या होता है ?
उ० : ठर्रा पीने वाला नाली में जा गिरता है और स्काच पीने वाला उस नाली को बनाने का ठेका हथिया लेता है।

अमर जीत, सुरजा : डियर गरीब चन्द जी, मनुष्य ईश्वर का ध्यान करते समय आंखें बन्द क्यों कर लेता है ?
उ० : बिल्ली सामने आ जाये तो कबूतर आंखें बन्द कर लेता है। आदमी इस आशंका में बन्द करता है कि खुदा-ना-खास्ता ईश्वर आ ही जाये तो ? दिल में तो भाई चोर होता ही है।

प्रेम बाबू शर्मा 'सुमन', बगीची परीजी : गरीब चन्द, आप भारतीय नारी का भविष्य क्या बता सकते हो ?
उ० : हमारा वर्तमान तक नारी के हाथ में है भाई लल्लू। इन्दिरा गांधी का नाम सुना है ? नारी के भविष्य की चिंता छोड अपने भविष्य की बात करो।

अशोक खत्री, फाफाडीह रायपुर : अंकल, आपके साथ हमारी चूहिया रानी इश्क लड़ाना चाहती हैं। क्या आप भी उससे ?
उ० : तुम्हें कैसे पता लगा ? तुम्हारे साथ रिहर्सल तो नहीं करती रही।

विनोदपुरी 'रंजु', लुधियाना (पंजाब) : प्यार की शुरुआत में लड़कियां लड़कों का स्वागत प्रायः चप्पलों से क्यों करती हैं ?
उ० : प्रेमी, चिकना घड़ा होता है। और घड़ा जब लिया जाता है तो उसे ठोक-बजा कर देखा जाता है।

मो० अब्बास हुसैन, साहिबगंज : गरीब चन्द जी, आपका स्वास्थ्य हर सप्ताह बिगड़ता जा रहा है। क्या 'दीवाना' वाले आपको खाना नहीं देते ?
उ० : मैं तो देश की चिंता में दुबला हुआ जा रहा हूं कि आप लोगों का क्या होगा ?

विजय कुमार शर्मा, अम्बाला छावनी : गरीब चन्द जी, ईमानदारी में 'ई' से इमान 'मा' से मान न से नाम 'दा' से दौलत 'र' से रक्षा इन सबके होते हुये भी आदमी बेईमानी के पीछे क्यों भागता है ?
उ० : बेईमानी में बेला है, ईरा है, मालती है और नीना है। पीछे क्यों न भागे ?

योगेश कुमार अग्रवाल, डीमापुर : 'ब्लैक-मनी' छिपाकर बन रहे हो 'गरीबचन्द', जानते नहीं हमें, कर देंगे, तुम्हें बड़े घर में बन्द। ?
उ० : ब्लैकमनी में बड़ी ताकत है बेटे अग्रवाल, हम ले लेंगे अग्रिम जमानत तुम नोचते रहोगे अपने बाल।

मो० रिजवान खान, रांची : गरीब चन्द आजकल के जमाने में बदमाशों की इज्जत होती है और शरीफों की इज्जत क्यों नहीं होती है ?
उ० : अगर हम बदमाशों की इज्जत न करें तो वह हमें जीने देंगे। शरीफ को इज्जत दो या न दो वह हमारा क्या बिगाड़ लेगा ?

उमेश ज्ञानचन्दानी 'उम्मी', बिलासपुर : गरीब चन्द जी, हाथी के दांत खाने के और दिखाने के और एवं आपके…?
उ० : हंसने के और, और मुस्कराने के और।

सुरेश कुमार बखारी, डीमापुर : आपकी गर्ल फ्रेंड ने हमें प्रेम-पत्र लिखा है, क्या करूं ?
उ० : मूर्खानन्द तुमने वही किया जो तुम्हें करना चाहिये था। मुझे बता दिया।

गरीब चन्द की डाक
दीवाना पाक्षिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

फैण्टम- गुमनाम कमाण्डर




'जो' यह फैन्टम है! इससे न उलझो, इससे फैसला कर लो!
वह जंगल की बकवास बन्द करो, नकाबपोश से समझौता ?
तुमने पहली भूल तो अपनी बन्दूक रख कर की है, यदि तुमने ध्यान दिया हो तो हमारे पास तीन हैं।
और सब का मुंह तुम्हारी ओर ही हैं., तुम कौन हो, तुम्हारा क्या खेल है अपनी बात बोलो!
©1980 King Features Syndicate, Inc. World rights reserved
इस नकाबपोश के साथ क्यों समय बरबाद कर रहे हो, गोली मार दो!
ठहरो 'होन' इसे जंगल का मालूम है हम इससे फायदा उठा सकते हैं!
पागल न बनो 'जो' उसकी तरफ देखो तो!
मैं देख रहा हूं, क्या बात है 'मो'?
अब उस चट्टान की ओर देखो, कुछ ध्यान में आया ?
?
वह तो फैन्टम सिर की चट्टान है! यह, यह फैन्टम है!
बेशक, 'मो' बड़ी चतुराई से चट्टान जैसा हुड बनाया गया है!
तुम्हारे जैसे जंगल के बदमाशों को डराने के लिये।
अपनी बात वापिस लो!
फैन्टम और शिकार चोर उन पेड़ों के दूसरी ओर हैं।
बाम्बासी वाले तुम्हारा क्या चक्कर है जनाब ? सारा हाथी दांत खुद ही हड़पना चाहते हो।
नहीं हाथी दांत को हाथियों के पास ही रखना चाहता हूं।
बकवास बन्द करो! बोलो तुम हमारे साथ हो या हम तुम्हें गोली से उड़ा दें।
क्या हम उन पर हमला करें।
अभी नहीं, उनकी बन्दूकें उसकी ओर तनी हैं।

सर्वप्रथम प्रकाशित सम्पूर्ण फिल्मी ड्रामा—सुल्तान प्रोडक्शन्स कृत

धर्मकांटा

निर्माता निर्देशक—सुल्तान अहमद

संगीत—नौशाद

गीत—मजरूह

राजकुमार—भवानी सिंह, वहीदा रहमान—राधा, अमजद खान—चन्दन, ज्वाला जितेन्द्र—शिवा, राजेश खन्ना—शंकर, रीनाराय—बिजली, सुलक्षणा पण्डित—चन्दा, हिना कौसर—गंगा, अन्सारी—इन्स्पेक्टर, सत्येन कप्पू—हरनाम सिंह—पूर्णिमा—ठकुराइन, मुकरी—बाबा।

कश्तियां जबकि किनारे पर पहुंच पाती हैं।

ना खुदा जिनका नहीं उनका खुदा होता है॥

(सूरज गांव वालों की नजर में एक सीधा-साधा इन्सान है जो शहर जाकर अपनी बीवी-बच्चों के लिए मेहनत, मजदूरी करता है। लेकिन वास्तव में वह इंसान के रूप में एक खूंखार डाकू भवानी सिंह है। भवानी अपने साथियों के पास आता है)।

चंदन—राम-राम ठाकुर। भवानी—क्या खबर लाये?

चंदन—किशन गढ़ से बारात आ चुकी है। (एक बूढ़ा फकीरा वहां मिलता है) फकीरा—किशनगढ़ से बारात चल चुकी है। तुम भी पहुंच जाओ अपनी बारात लेकर।

भवानी—फकीरा तू आ गया रास्ते में। फकीरा—आना-जाना तो लगा ही रहता है ठाकुर। यह संसार है। कौन आता है और कौन जाता है यह तेरी समझ में नहीं आयेगा।

एक दिन तुम को भी जाना है। भवानी—पहले अपने बदन के चीथड़े बदल। यह ले पैसे और आज से अपने मुंह पर ताला लगा ले। फकीरा—इस पाप की दौलत से बदन के चीथड़े बदलूं और जबान पर ताला लगाऊं। फकीरा भिक्षा नहीं लेता। (फकीरा भवानी के पैसे, रुपये मुंह पर मारता है। चन्दन फकीरा को गोली मार देता है और इसके साथ ही फिल्म का टाईटल चलता है) भवानी और उसके साथी बारात लूटते हैं और दुल्हन के जेवर उतारते हैं)।

(भवानी दुर्गा मां के मंदिर में आता है) भवानी—भवानी मां तेरी दी हुई शक्ति से तेरा यह पुजारी आज विजय पाकर आया है। यह भेंट स्वीकार कर। मां तेरे भवानी सिंह का सर अगर झुके तो तेरे आगे झुके। (भवानी अपने खून से भवानी मां की मूर्ति को तिलक करता है। तभी वहां चन्दन अपने बेटे ज्वाला को लेकर आता है।



भवानी—चंदन कुछ दिनों के लिए हम अपने गांव जा रहे हैं। (भवानी गांव में अपने घर आता है। भवानी के घर में उसकी पत्नी राधा है। छोटी सी बच्ची है और राम व मुन्ना स्कूल गये हैं। भवानी एक लाकिट अपनी बेटी के गले में पहनाता है जिस पर दुर्गा की तस्वीर बनी है)।

भवानी—यह दुर्गा मां का लाकिट है जो आज तक मेरी रक्षा करती आई है। अब तेरी करेगी। राधा तू कितनी दुबली हो गई है मेरे बगैर। (तभी राम और मुन्ना अपने दोस्त हरनामसिंह के बेटे के साथ वहां आते हैं) वह दोनों को अपनी गाड़ी में घर छोड़ आया करता है) मुन्ना—मैं बड़ा होकर पुलिस बनूंगा और चोरों को पकड़ूंगा। राधा···कितनी बार कहा है एक सांस में दूध मत पिया कर। सारे कपड़े खराब कर लिये। (राम और मुन्ना ने अपने बाजू पर शंकर भगवान की मूर्ति गुदवाई है) राम···मां ने कहा था इससे शंकर भगवान हमेशा हमारी रक्षा करेंगे।

(भवानी, राधा के लिए एक हार लाता है। लेकिन राधा जानती है कि वह किसी मासूम दुल्हन के गले से उतारा हुआ है। राधा पाप की दौलत को हाथ भी नहीं लगाना चाहती)।

भवानी : फिर वही भाषण। राधा : सब बच्चों को पता चलेगा कि उनका बाप एक डाकू है तो उसके दिल पर क्या बीतेगी। दुनिया वाले हमें गिद्ध की तरह नोच डालेंगे।

भवानी : किसी मां ने ऐसा बेटा नहीं जना जो भवानी सिंह की बीवी और बच्चों की परछाईं को भी हाथ लगा सके। मुझ में शक्ति है, ताकत है। जलाकर राख कर दूंगा। राधा : तुम अपनी जिंदगी के रास्ते नहीं बदल सकतीं।

(भवानी के इशारे पर चंदन, हरनाम सिंह के बेटे को उठवा लेता है) चन्दन : यह लो चिट्ठी और अपने मालिक से कह देना कल शाम सूरज डूबने से पहले पांच लाख रुपये तुम्हारे हाथ नहीं भिजवाये तो उनके बेटे की जिंदगी का सूरज हमेशा के लिए डूब जायेगा। (ड्राइवर भैरव जब हरनाम को यह बताता है तो हरनाम उसे ही मारता है) हरनाम : तू उनसे मिला हुआ है। बता तेरा कितना हिस्सा है। भैरव : मैं कसम खाता हूं मालिक। हरनाम : कसम तो पुलिस के सामने खाना, वह जूते मार-मार कर उगलवा लेंगे। ठकुराइन : वह मेरे बेटे को मार डालेंगे। हरनाम : तो तुम क्या चाहती हो मैं हार मान लूं,खानदान की इज्जत मिट्टी में मिला दूं। ठकुराइन : हमारा एक ही बेटा है वही न रहा तो खानदान का नाम लेने वाला कौन होगा। मेरे बच्चे की बलि मत चढ़ाओ।

(राधा को पता चलता है तो वह भवानी के अड्डे पर आती है)

राधा : मैं राजू के लिए आई हूं। राजू : उसे [illegible] को [illegible] कोन मुझे मार डालेंगे। [illegible] : [illegible] के बेटे मैं तुझे तेरी मां के पास जरूर पहुंचाऊंगी। (लेकिन रास्ते में ही चन्दन फिर राजू को उठा लेता है और भवानी सिंह को सौंप देता है)।

हरनाम : भवानी मैं पांच लाख रुपये ले आया हूं। मेरा बच्चा लौटा दे। (लेकिन तभी भवानी के हाथ से राजू छूट जाता है और पहाड़ी से गिरकर मर जाता है)।

ठकुराइन : नहीं मेरे लाल नहीं। हरनाम : भवानी तुझे पांच लाख रुपये चाहिए थे ना, यह ले और मेरा बच्चा जिंदा वापस लौटा दे। (ठकुराइन दुर्गा के मंदिर में आती है)

ठकुराइन : मां आज मैं तुमसे इंसाफ मांगती हूं। इस जालिम ने मेरे मासूम बच्चे के खून से हाथ रंगे हैं। इसे भी औलाद का सुख कभी नसीब न हो। यह एक दुखियारी मां का शाप है। आज के बाद तू अपनी औलाद की सूरत भी न देखेगा। (तभी गांव में सैलाब आ जाता है और सब एक-दूसरे से बिछड़ जाते हैं)।

राधा : देख लिया तुम्हारे पाप ने मेरी गोदी सूनी कर दी मेरे बच्चे मुझसे बिछड़ गये।

(राम एक ट्रेन में आता है और एक चोर के हाथ लग जाता है। मुन्ना भी एक दूसरे चोर के हाथ लग जाता है। इधर भवानी को अब अपने पापों का अहसास होता है। वह अपने अड्डे पर आता है) चंदन : ऐसा कभी नहीं हो सकता। तुम चाहते हो हम अपने आपको पुलिस के हवाले कर दें, अपने हथियार डाल दें।

भवानी : हां चंदन आज मुझे अहसास हुआ जिस रास्ते पर मैंने तुम्हें चलाया वह गलत था। चंदन : तुम बुजदिल हो।

भवानी : बुज दिल हम पहले थे अब नहीं हैं। (चंदन नहीं मानता उसके दूसरे साथी भी अब उसके साथ ही जाते हैं)।

भवानी : ठीक है तुम सबको मेरा आखरी सलाम।

चंदन : ठाकुर न तुम यहां से जाओगे न तुम्हारी लाश पुलिस को मिलेगी। इसकी लाश को हम खुद जलायेंगे। भवानी : भवानी की चिता को कोई डाकू नहीं जलायेगा।

(भवानी सिंह उन सबसे बचता हुआ पुलिस स्टेशन भागा है) इंस्पेक्टर : कौन हो तुम! भवानी : कानून और पुलिस से भागता हुआ एक मुजरिम भवानी सिंह। मैं खुद को कानून के हवाले करने आया हूं। (तभी वहां चंदन और उसके साथी आ जाते हैं और गोलियां चलाते हैं) इंस्पेक्टर : भवानी सिंह अपने साथ तुम यह क्या वक्त लेकर आये हो।-भवानी : फिक्र न करो इंस्पेक्टर। सच्चाई के लिए वक्त को भी थाम लिया जायेगा।

(इस लड़ाई में चंदन सिंह मारा जाता है। भवानी अपने आपको कानून के हवाले कर देता है। ज्वाला अपने बाप की लाश देखता है) ज्वाला : तेरे खून की कसम बापू मैं तेरी मौत का बदला भवानी सिंह से जरूर लूंगा।

(अदालत भवानी सिंह को उम्र कैद की सजा सुनाती है)।

भवानी : मैं जा रहा हूं। राधा : चले तो तुम पहले गये थे पाप की दुनिया में। अब तो तुम हमेशा मेरे पास रहोगे। भवानी : काश मेरे बच्चे मुझे प्रायश्चित करते हुए देख लेते।

(बाबा मुन्ना के हाथ में शिव की मूर्ति गुदी देखकर उसका नाम शिवा रखता है। उधर आशा राम के हाथ में वही निशान देखकर उसका नाम शंकर रख देता है। दोनों ही बच्चे एक ही शहर में अपने-अपने ढंग से चोरियां करते हुए बड़े हो जाते हैं। खिलौने बेचने वाली बिजली नाम की लड़की शंकर से प्यार करती है)।

राजन : बिजली रानी क्या बात है। आज तो दुल्हनियां दिख रही हो किस पर गिरोगी। बिजली : तेरे शंकर पर।

(बिजली नाचती गाती है, शंकर उसका साथ देता है)।

गाना--ये गोटेदार लहंगा निकलूं.....

(शंकर कुछ चोरी का माल लेकर भागता है। तभी वहां शिवा पुलिस इंस्पेक्टर के भेष में अपने साथियों के साथ आता है और शंकर से सब माल ले लेता है। तभी शिवा असली पुलिस को उधर आती देखता है)।

शिवा—पुलिस आ रही है। चुपचाप यहीं खड़े रहना और अपने आपको पुलिस के हवाले कर देना। शंकर—पुलिस। फिर तुम कौन हो। शिवा—आजकल की तरह की पुलिस हो गई है। चोर पकड़ और माल पकड़। माल हमने पकड़ लिया चोर वह पकड़ेगी। (शंकर समझ जाता है कि वह उसे चकमा दे गया। इधर चंदन का बेटा ज्वाला सिंह अब एक बड़ा डाकू बन चुका है और जगह-जगह लूट मार करता है। राधा अपने पिता के पास रहती है। ज्वाला वहां आता है)।

ज्वाला—भवानी सिंह की जोरन। यह तो अपने दुश्मन का घराना है।

एक ही हथकड़ी है। शिवा को तैरना नहीं आता। पानी में कूदने के बाद शंकर उसे बचाता है। तभी शंकर को सांप काट लेता है तो शिवा जहर चूस कर उसे बचाता है)।

(शंकर और शिवा दोनों में दोस्ती हो जाती है। दोनों गाते हैं)।

गाना—दुनिया छूटे यार न छूटे

(शंकर और शिवा एक दिन राधा के घर आ जाते हैं। राधा उन्हें खाना खिलाती है) शिवा—मजा आ गया। ऐसा लगता है जैसे वर्षों बाद घर का खाना खाया है।

(उन दोनों के जाते ही वहां ज्वाला आता है) ज्वाला पांय लागू ठकुराइन। राधा—अब क्या लेने आया है यहां।

ज्वाला—पुराना लेन-देन है वह तो जिंदगी भर चलता ही रहेगा। जिसने हमसे हमारे बाप को छीना है हम उसे मौत के हवाले करेंगे। ठाकुर कहां है? राधा—वह घर में नहीं है। (ज्वाला और उसके साथी भवानी सिंह की फसल को नष्ट कर देते हैं। उनके जाने के बाद भवानी आता है)।

भवानी—राधा यह सब कैसे हुआ किसने किया। बता मैं उसकी जान ले लूंगा। जिसने यह तबाही की है। भवानी सिंह उसे जिन्दा नहीं छोड़ेगा। (राधा बात बढ़ाना नहीं चाहती और कह देती है कि कोई जंगली जानवर यह सब नष्ट कर गया।

(मुन्नी बाई ठाकुर हरनाम सिंह की हवेली में चन्दा का मुजरा रखने का प्रोग्राम बनाती है और उसके बाद चन्दा को सेठ के हाथ बेचने का प्रोग्राम तय कर लेती है। गंगा की शादी के अवसर पर चन्दा के मुजरे का प्रोग्राम है लेकिन तभी वहां ज्वाला आ जाता है)।

हरनाम—ज्वाला सिंह मैं तेरे हाथ जोड़ता हूं। चला जा यहां से। मेरी बच्ची की बारात आने वाली है। उसकी डोली उठ जाने दे उसके बाद जो तू मांगेगा मैं दे दूंगा। मेरी इज्जत तेरे हाथ में है। ज्वाला—तेरी जान भी हमारे हाथ में है। आधे बाराती हमारे साथी हैं। छोटी सी गलती से गोली चल सकती है। (तभी चन्दा नाचती-गाती है)।

गाना—जालिम तेरे जहान की…

(ज्वाला, गंगा को पकड़ लेता है) हरनाम—ज्वाला सिंह छोड़ दे मेरी बेटी को। मेरी इज्जत से मत खेल। ज्वाला—तेरी बेटी को हम अपनी जोरन बनायेंगे।

(तभी वहां शंकर और शिवा दोनों आते हैं) हरनाम—शिवा, ज्वाला सिंह गंगा को उठाकर ले गया है। शंकर—चल शिवा। भवानी सिंह—यह लाकिट किसका है। शिवा—मेरी मुंह बोली बहन गंगा का। (भवानी, गंगा को डाकुओं से बचाकर हरनाम के घर लेकर आता है) ठकुराइन—भवानी सिंह अब क्या लेने आया है। भवानी—आज कुछ लेने नहीं देने आया हूं। गंगा—मां इन्होंने ही मेरी जान बचाई है।

ठकुराइन—इसी ने तेरे भाई की जान ली थी। भवानी—मैं बीस साल से प्रायश्चित कर रहा हूं! अपना शाप वापस ले लो ठकुराइन। हरनाम—चौदह साल जेल में रह कर अब यह मुजरिम नहीं रहा। अपना शाप वापस ले लो। गंगा—मां मैं कसम खाकर कहती हूं इन्होंने ही मेरी जान बचाई है। ठकुराइन—मैंने अपना शाप वापस लिया।

(राजन और बाबा भेष बदल कर राधा के घर आते हैं) वहां वह शंकर और शिवा की बचपन की तस्वीर देखते हैं। राधा बताती है कि वह उसके बेटे राम और लक्ष्मण हैं। वह दोनों बता देते हैं कि वह उसके दोनों बेटे जिन्दा हैं)।

इधर शंकर, शिवा के हाथ पर शंकर का निशान देखता है) शंकर—मुन्ना। मैं तेरा दोस्त नहीं भाई भी हूं। अगर तुझे कुछ हो गया तो मैं सारे संसार को आग लगा दूंगा।

(लड़ाई में शिवा को गोली लग गई थी। शंकर मन्दिर में फरियाद करता है और शिवा के हाथ से गोली निकाल देता है। राधा, भवानी को बता देती है कि उसके दोनों बच्चे जिन्दा है और वहीं है जिन्होंने वो खून किया था। तभी मौका पाकर ज्वाला सिंह के आदमी राधा को उठाकर ले जाते हैं। भवानी को यह भी पता चल जाता है कि गंगा उन्हीं की बेटी है। ठकुराइन ने उसे गंगा से निकाला था)।

ठकुराइन—गंगा को मैंने जन्म नहीं दिया लेकिन अपनी बेटी की तरह पाला है। भवानी—वह तुम्हारी ही बेटी रहेगी। (गंगा यह सुन लेती है और अपनी मां को बचाने के लिए ज्वाला सिंह के अड्डे पर आ जाती है। ज्वाला ने खबर भेजी थी अगर राधा चाहिए तो गंगा को भेज दो।

(बिजली और चन्दा को मुन्नी बाई ज्वाला के अड्डे पर ले आती है। वह चन्दा को नचाना चाहते हैं। लेकिन उसकी जगह बिजली नाचती गाती है)

गाना—तेरी मेरी है नजर कातिल की।

गंगा—ज्वाला तुझे गंगा चाहिये थी वह आ गई है, अब मेरी मां को छोड़ दे। ज्वाला—तेरी मां भवानी सिंह की लुगाई है। यह मेरी गुलामी करेगी। गंगा हमारे दुश्मन की बेटी है। अब यह हमारी जोरन नहीं रखैल बनकर रहेगी।

(तभी भवानी सिंह आ जाता है। वह गंगा को ज्वाला से बचाता है और उसे खूब मारता है। राधा, भवानी को बन्दूक देती है) राधा—यह ले ठाकुर सारी गोलियां इसके सीने के पार कर दे। (ज्वाला पहाड़ी के नीचे कूद जाता है) भवानी—यह घाटियां तो क्या ज्वाला आज तुझे जमीन और आसमान भी नहीं छुपा सकते।

(भवानी सिंह ज्वाला को गोलियां मारता है। तभी पुलिस आ जाती है) इन्स्पेक्टर—लाश को अपने कब्जे में ले लो। भवानी सिंह, ज्वाला सिंह के जिन्दा या मुरदा गिरफ्तारी पर जो इनाम था वह तुम्हें मिलेगा। भवानी—चौदह साल की सजा के बाद मेरा इनाम मुझे मिल गया। अब मुझे मालूम हुआ यह संसार एक धर्मकांटा है।

(सब बिछड़े हुए मिल जाते हैं। शंकर और बिजली तथा शिवा और चन्दा भी मिल जाते हैं)।

पृष्ठ १७ से आगे

इतना सारा खून। मैं तो इसका सारा उत्तरदायित्व सरकार पर मानता हूं। इस शर्मनाक घटना के बाद सरकार को तुरन्त इस्तीफा दे देना चाहिये। इस सरकार में अल्पसंख्यक समुदाय के व्यक्तियों के साथ अन्याय हो रहा है। हमें अल्पसंख्यकों की रक्षा के लिए सरकार को उखाड़ फेंकना चाहिए।'

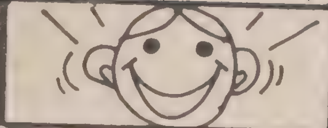
यद्यपि देश की जनता गूंगी नहीं है मगर लाचार अवश्य है। खोटे सिक्कों में से काम चलाऊ सिक्के का चुनाव करना बड़ा कठिन है। और फिर जब बाप ही सन्तान की रोटी छीनने लगे, तो सन्तान का जीवन क्या होगा? मगर सच-सच ही होता है। आखिरकार बच्चन की करतूतों का पर्दाफाश होने लगा। समाचार पत्रों में उसके नाम की खूब छीछालेदर की गयी। बच्चन के जेल के दिन हो गये। देश द्रोह तक की बातें होने लगीं। अब तो बच्चन की मुसीबत आ गयी। मगर अभिमन्यु की तरह बच्चन ने भी मां के गर्भ में पेंतरे बाजी सीख ली थी। आरोपों से मुक्ति पाने का तुरन्त उसने उपाय सोचा। पहले तो अखबारों में उसने अपनी करतूतों का खण्डन किया और कहा—'कौआ कोसने से कभी हंस को बुखार नहीं आता। मेरे विरुद्ध ये सब अखबार झूठे हैं। मैं देश की जनता से अपील करता हूं कि इन्हें कोई न पढ़े। उसी दिन से बच्चन ने दृढ़ निश्चय कर लिया कि उसे सफल नेता बनना है। उसके किसी मित्र ने एक दिन उसे बताया—'प्यारेलाल, यदि सचमुच ही राजनीति जगत में तुम चमकना चाहते हो, तो पहले गांधी जी की समाधि पर जाकर कसम खाओ और फिर सर पर कफन बांधकर 'लम्बी दाढ़ी बढ़ाकर कुर्सी की ताक में लग जाओ।'

बच्चन के दिमाग में यह बात बैठ गयी। दाढ़ी बढ़ाकर कफन बांधकर और करतूतों को दाढ़ी में छुपा कर जब बच्चन दिल्ली को चलने लगे, तो एक मित्र ने फिर टोक दिया—'प्यारेलाल टेढ़ी मूठ की एक बेंत और हाथ में रखो। बगैर बेंत के आजकल नेता नहीं जंचता।' खैर बच्चन ने टेढ़ी मूठ की एक बेंत भी ले ली और चल पड़े दिल्ली को। बगैर टिकिट के गाड़ी में बैठ लिये। गाड़ी धीरे-धीरे हिचकोले खाने लगी। बगैर टिकिट का सुहाना सफर था। बच्चन को स्वप्न आने लगा। वह कुर्सी पर बैठा है। लोग उससे जलने लगे हैं। वह सारे देश का स्वामी बन गया है। लोग उससे रोटी मांग रहे हैं। वह उनकी आंतें खींच रहा है। जनता उसे वोट दे रही है। वह उसको भूख, गरीबी, अत्याचार और तुगलकशाही दे रहा है। बूढ़े और मोटे खटमलों को खून चूसने की स्वतन्त्रता है मगर बच्चन के कानून से छोटी-छोटी चींटियों को ढूंढ़-ढूंढ़कर मौत के घाट उतारा जा रहा है। जनता रो रही है। गरीबों का करुण-क्रन्दन बच्चन को बड़ा ही अच्छा लगता है इसलिए वह हंस रहा है। पांच वर्ष का नाटक चल रहा है। दर्शक उकता रहे हैं। वोट भिखारियों का मेला लगा हुआ है। ऐसे ही मेले में बच्चन वोट मांगने पहुंच जाता है। पत्थर, अंडे, टमाटर, बैंगन और गालियों से बच्चन का स्वागत होता है जनता भी बड़ी कम्बख्त है। बच्चन को लोगों ने हाथों पर उठा लिया। बच्चन ने समझा उसका स्वागत ही रहा है। मगर ये क्या! एक अनाड़ी ने उसे ऊपर से उठाकर मंच पर पटक दिया। वह हड़बड़ा कर उठा, तो रेल में ऊंघ रहा है। एक महिला पूछती है—'क्या हुआ साहब आप नहीं छोड़ूंगा-नहीं छोड़ूंगा पुकार रहे थे।'

बच्चन ने आंखें तरेर कर कहा—'अभी तो स्वप्न था साकार में सचमुच नहीं छोड़ूंगा।'

क्रमशः

हंसना मना है



एक बार एक फकीर एक बादशाह के दरवाजे पर भीख मांगने गया, उसने देखा बादशाह अल्ला से दुआ मांग रहा है कि उसे बहुत सा धन दे।

यह देख फकीर बिना कुछ कहे वापिस जाने लगा, बादशाह ने पूछा, वह क्यों आया था क्यों वापिस जा रहा है?

'बादशाह सलामत मेरे घर बहुत मेहमान आते हैं सोचा आपसे कुछ मांग लूं, पर यहां आकर मैंने देखा आप तो खुद ही अल्लाह से दौलत मांग रहे हैं। मैंने सोचा भिखारी से क्यों मांगू, सीधा अल्लाह से ही क्यों न मांग लूं।'

●

एक आदमी पोस्ट आफिस में वहीं से दिये गये पेन से टेलीग्राम लिखने की कोशिश कर रहा था। तीन बार असफल कोशिश के बाद काऊंटर पर बैठी लड़की से उसने पूछा, 'क्या ऐसा मुमकिन है कि बादशाह अकबर ने अपने दस्तखत करने को इस पेन का प्रयोग किया हो?'

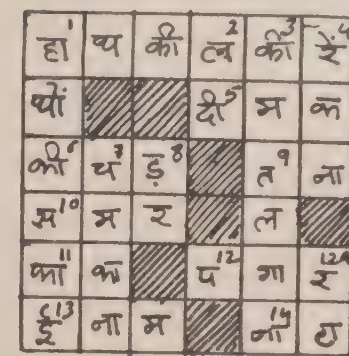
'पूछ-ताछ दूसरी खिड़की में कृपया' लड़की ने उत्तर दिया।

●

शराबबन्दी सुधारक महिला एक बार के बाहर खड़ी लोगों को समझाने का प्रयास कर रही थी। तभी एक आदमी बार के दरवाजे से बाहर निकला उसकी सांस से शराब की तेज बू आ रही थी। और महिला सुधारक ने कहा 'सोचो, यदि तुम स्वर्ग के द्वार पर शराब की बू से भरी सांस लेकर पहुंचो, तो क्या भगवान तुम्हें अन्दर घुसने देंगे?'

'प्रिय मेम साहब', जब मैं स्वर्ग जाऊंगा तो मुझे अपनी सांस यहीं छोड़ कर जाना पड़ेगा, आदमी ने उत्तर दिया।

दीवाना के अंक १४ में प्रकाशित वर्ग पहेली का सही हल

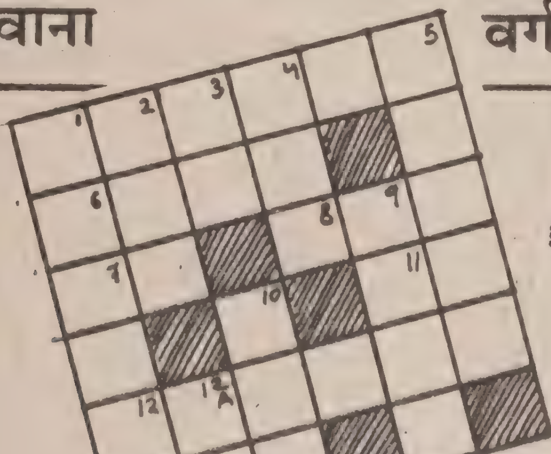


(निर्णय लाटरी द्वारा
विजेता—सन्तोष शर्मा श्रीराम गंगाराम एजेन्सीज, धर्मशाला रोड, कांगड़ा (हि० प्र०) 176001

दीवाना के अंक 15 में प्रकाशित चित्र वर्ग पहेली का सही हल

कसमसाहट, अधकचरा, पारिवारिक हल—कारावास (निर्णत लाटरी द्वारा) विजेता—अजयकुमार अग्रवाल, 178 विजय भवन, जकाली स्ट्रीट, बरेली।

दीवाना वर्ग पहेली १० रु. इनाम जीतिये



अन्तिम तिथि
30-10-82

संकेत बायें से दायें

1. कहीं यह हो तो समझो वहां शांति व एकांत नहीं हो सकता (3-3)
6. आधे वाहन के पीछे छड़ी रख के घर का पत्र लिखो और लाओ? (4)
7. अनंत इच्छा का कार्य? (2)
8. काम चलाने में गम्भीरता खोनी पड़ती है?' (3)
11. लौटते में न जीतने पर ठहरना। (2)
12. नाटक वाले अलग होकर दोबारा इकट्ठे हों तो जल्दी नहीं मचाना होगा। (2,4)
13. स्त्री में थोड़ी सी गर्मी हो तो उसका सम्बन्ध लेखन से हो सकता है। (3)

ऊपर से नीचे

1. खाना का रेड़ लो और उसे उल्ट कर ऐसा बना कि पता लगे स्वादिस्ट चीज लाई जा रही है। (4,2)
2. आप और मैं मीठे फल के साथ लगे तो पानी गर्म होगा। (3)
4. ऊपर मकान में आनन्द अत्यधिक है। (3)
5. उल्टा हो नाला, उसमें हल चले और एक ठहाका लगे तो फसल का झूमना पाओगे। (5)
9. कपड़ा फटने की सी आवाज को साथ मिले तो डण्डा लेकर वह गाय, बैल लेकर जायेगा। (4)
10. हाथ की टी और सालन सेवा करवा सकती है। (3)
12. ए. मीट गलाने में आया खिचाव। (2)

नाम ——————————
——————————
पता ——————————
——————————

दूसरों पर आश्रित रहने का फल

□ शमशेर अ० खान

एक गांव में एक लकड़हारा रहा करता था। उसके पास एक गधा था। लकड़हारा जंगल में लकड़ियां इकट्ठा करता और गधे की पीठ पर लकड़ियां लादकर शहर ले जाया करता तथा सन्ध्या को जब सारी लकड़ियां बिक जातीं तो वह गधे के साथ घर लौट आता।

उसी शहर में एक राजा रहता था जिसके पास विशाल भव्य भवन था।

लकड़हारे के गधे की दृष्टि सवेरे-शाम राजा के महल पर चली जाती। तब वह मन ही मन सोचा करता—'यदि वह राजा का गधा होता तो वह लकड़ियों के स्थान पर सोने या चांदी का बोझ अपनी पीठ पर लादकर ले जाता और उसे खाने को अच्छी-अच्छी चीजें मिलतीं। लेकिन गधा तो था केवल एक गरीब लकड़हारे का दास।

एक दिन भगवान ने उसकी प्रार्थना सुन ली। राजा का पालतू तोता एक दिन जंगली तोतों के निकट से होकर गुजर रहा था। जंगली तोतों ने राजा के पालतू तोते को अपना साथी नहीं बनाया बल्कि उसे अपने चोंचों से मार-मार कर अधमरा कर दिया। तोता घायल होकर नीचे गिर पड़ा कि इतने में गधा वहां से गुजरा। तोते ने आवाज दी—'गधे भय्या! गधे भय्या! मैं हूं राजा का तोता। मुझे राजा के महल तक पहुंचा दो। मैं आपके इस अहसान को जीवन भर नहीं भूलूंगा।'

गधे ने कहा—'किन्तु वह वहां जायेगा कैसे। राजा के आदमी उसकी भद्दी आवाज और उसके बदशक्ल थोबड़े को देखकर वहां से भगा देंगे।' तोते ने कहा—'तुम सही कहते हो भय्या! लेकिन तुम मुझे वहां तक किसी प्रकार ले चलो। मुझमें उड़ने की शक्ति अब नहीं है।'

तोता किसी प्रकार गधे की पीठ पर सवार हो गया। गधा बहुत खुश हुआ। सोचने लगा—'चलो एक अवसर तो हाथ लगा। किन्तु वहाँ मैं रह नहीं सकता......'

तोते की बुद्धि में एक तरकीब सूझी, उसने गधे से कहा,—'मुझे अपने कान में बिठा लो। तुम महल के फाटक पर अपना मुंह खोलना और आवाज न निकालना...मैं मनुष्य की बोली में बोलूंगा।' गधा तोते की इस सूझ पर फूला न समाया।

गधा ज्यों ही राजा के महल के फाटक पर पहुंचा। कान में बैठे हुए तोते ने कहा—'राजा जी की जय।'

दरबान यह सुनकर आश्चर्य चकित रह गया कि गधा आदमियों जैसी बात करता है, वह तुरन्त गधे को राजा के महल के अन्दर ले गया।

राजा अपने सिंहासन पर विराजमान था। यों ही गधे और राजा का आमना-सामना हुआ। कान में बैठे तोते ने कहा—राजा जी की जय! राजा जी की जय!'

इस विचित्र गधे को देखकर राजा आश्चर्य में पड़ गया। राजा ने गधे को रहने के लिये एक अच्छा सा कमरा दिया और देखभाल के लिए सेवक नियुक्त कर दिये तथा खाने-पीने की अच्छी व्यवस्था करवा दी।

दो-तीन दिन बाद तोते ने गधे से कहा—'अब मुझे आज्ञा दो। मैं कान से बाहर आ जाऊं...तुम्हारी इच्छा पूरी हो गयी। तुम चले जाओ।'

किन्तु गधे ने उसकी न मानी।

एक दिन राजा ने अपने प्रिय गधे से परिचय कराने के लिए बाहर के कुछ अतिथियों को आमन्त्रित किया और इस अवसर पर एक भव्य समारोह का आयोजन किया। उस दिन राजा के सेवकों ने गधे को नहलाया और अच्छे से सूट में समारोह हाल में लाये। इस प्रकार बने-ठने गधे को राजा के सभी अतिथियों ने काफी तारीफ की, फिर उनमें से एक अतिथि ने गधे से गाने की फरमाइश की। गधा पहले से ही अपनी तारीफें सुन-सुनकर मन-ही-मन गद्गद् हो रहा था। अतिथियों की फरमाइश पर अविलम्ब अपनी ही आवाज में रेंकना शुरू कर दिया, गधे की इस मूर्खता पूर्ण हरकत पर तोता गधे के कान से निकल कर राजा के पास पहुंच गया और जब गधे की पोल खुली तब राजा के हरकारों ने उसकी पिटाई करके उसे वहां से भगा दिया। इसी प्रकार किसी ने सच ही कहा है कि दूसरों के सहारे ऊंचे ख्वाब देखने वाले और अपनी बेवकूफी को अक्लमंदी समझने वालों को यही फल मिलता है।

मोसेज चमत्कार फिर से दृष्टि गोचर—

दक्षिणी कोरिया का मोसेज चमत्कार का निजी वार्षिक रूप फिर से देखने को मिला। लगभग डेढ़ घंटे के लिये सीओल के दक्षिण पश्चिम में लगभग ३५० किलोमीटर पर स्थित चिन-डो द्वीप में समुद्र के पानी ने दो भागों में बंट कर बीच में रास्ता छोड़ दिया था।

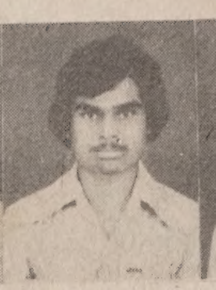
पचास हजार से भी अधिक कोरियन तथा विदेशी पर्यटकों ने इस ज्वारीय परिस्थिति से उत्पन्न चमत्कार को अपनी आंखों से देखा था। समुद्र के बीच बने २.८ कि. मी. चौड़े इस पथ से उन्होंने समुद्रीय जीव जन्तु मछली केकड़े घोंघे इत्यादि पकड़े। यह पथ चिन-डा तथा करीबी मो-डो द्वीपों के बीच दिखाई दिया था। यह चमत्कार दुबारा भी हो सकता है।

बोलने वाला फ्रिज

जापान की एक फर्म ने एक ऐसे फ्रिज का निर्माण किया है जो बोलता है। अधिक सामान भर देने से, वह कहता है बस कीजिये ज्यादा सामान हो गया तथा ३०सैकिंड से अधिक खुला रहने पर वह द्वार बन्द करने को कहता है।


नरेश कुमार सेतिया (पप्पू), हकीकत नगर (शुभ आनन), जीन्द जंक हरियाणा, 20 वर्ष ।


ठाकुर विनोद सिंह, मकान नं० 15/103, जी. एम. नगर, पो० बाला नगर, हैदराबाद ।


अशोक सिंह, म० नं० 15/103, गुरु मूर्ति नगर, पो० बाला नगर, हैदराबाद, 21 वर्ष ।

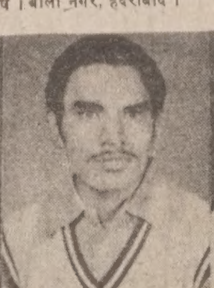

तहजीब हुसैन, मो० डंरवा, गोकलदास रोड मुरादाबाद, (यू. पी.), 18 वर्ष ।


गुरुविन्दर सिंह, डब्लू. जैड. 24 ए, मुखराम पार्क एक्स, तिलक नगर, नई दिल्ली ।


वहीद खान पठान, युराना नर्सेस क्वाटर नं० 4, हमोदिया हास्पिटल, भोपाल, 18 वर्ष ।


गुरमीत सिंह खालसा, मोटर स्टोर, जी. टी. रोड, भटिण्डा 15 वर्ष, दीवाना पढ़ना ।


शमीम उररहमान, 50, दुर्गा प्रसाद, पीली भीत (उ. प्र.), 20 वर्ष, पत्र मित्रता करना ।

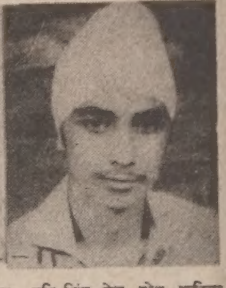

सन्तोष कुमार मिश्रा, स्टेट बेंक आफ इण्डिया, पन्ना (म. प्र.), । वर्ष, फिल्म देखना ।


सुरेश कुमार मोदी, सुरेश स्टोर, जे. एल. नेहरू रोड, पो. रानी गंज, 18 वर्ष, दीवाना पढ़ना ।


जसविन्दर एस. बिट्टू, वार्ड नं० 6, बुधवारी पारा, डोंगर-गढ़, (म. प्र.), 18 वर्ष ।


धीरू सिंह 'संजू', द्वारा अम्बिका प्रसाद सिंह, नई गोदाम, गया, 16 वर्ष, मारपीट करना ।


सुरेन्द्र श्रेष्ठ (अकेला), थापा-थली, (काठमाण्डो), नेपाल, 18 वर्ष, दोस्ती करना ।


हरि सिंह, मेन रोड झरिया, अरोरा रेडियो कार्नर, 16 वर्ष दीवाना पढ़ना, पत्र लिखना ।


सन्तोष कुमार अम्बरीश, बी. काम. फाइनल, गुरुद्वारा रोड, नई बस्ती, टुण्डला (आगरा) ।


विशन भिजराव शहारे, किशोर नगर, अमरावती, 15 वर्ष, दीवाना पढ़ना, डाक भेजना ।


मोती लाल गौतम, ई./121, माया पुरी, नई दिल्ली-64, 18 वर्ष, फोटो खींचना ।


वर्मा राजेन्द्र कुमार, वार्डन 12-बी. 47, गांधीधाम (कच्छ), 17 वर्ष, दीवाना पढ़ना ।


मो० दुर्मद ला मरीहा, दाऊद सराये सहारनपुर, 13 वर्ष, क्रिकेट खेलना, फिल्म देखना ।


राजेन्द्र पाल अरोरा, रामराज्य इण्डस्ट्रीज, गोविन्द रोड, रुद्रपुर, (नैनीताल) ।

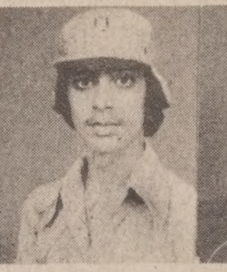

जावेद अहमद खान, प्रतापपुर जावर माइन्स, उदयपुर, । वर्ष, फुटबाल खेलना ।


महेश जनजानी, बैरक नं० 714/40, हास्पिटल तेरया उल्हास नगर, 18 वर्ष ।


भीम रत्न तुलाधर, ब्लाक नं० 11/64, असन कमलाक्षी, काठमाण्डौ (नेपाल) ।


विनय मित्तल 113/117 ए, स्वरूपनगर, कानपुर (उ. प्र.), 17 वर्ष, पत्र मित्रता करना ।


अशोक चौठिया, दाऊजी मंदिर के पीछे, बीकानेर, 16 वर्ष, बाल पत्रिकायें पढ़ना ।


अशोक मनूजा, ब्रजराज नगर, उड़ीसा, 16 वर्ष, दीवाना पढ़ना, तार भेजना ।


अनिल कुमार गुप्ता, जगदीश मैडिकल स्टोर, मंगलधुरा मालावाड़, (राज.), 15 वर्ष ।


सैयद नाशक अली, महमद मंजिल, इमाम वाड़ा, अजमेर 16 वर्ष, कसरत करना ।


मिलौदे कयम् पावार, धराकोपर नित्यानन्द नगर, हुसैन की चाप के सामने बम्बई, 18 वर्ष ।


अमरजीत सिंह सेखों, ककिशना नगर, लुधियाना, 16 वर्ष, पढ़ाई करना, पत्र डालना ।


सुरेश कुमार, दीलानीपुर, अंदमान द्वीपस, 15 वर्ष, लड़कों से दोस्ती करना ।


सुखराम सिंह तोमर, 6, आनन्द गंज झिरी उज्जैन, 22 वर्ष, फरमाईश करना ।


संयोग कुमार, विग 6, 17/7, प्रेमनगर, देहरादून, 13 वर्ष, डाक टिकट संग्रह करना ।


मो० एजाज आजाद, आजाद मंजिल, पटना सिटी, 13 वर्ष, शतरंज खेलना, फिल्म देखना ।

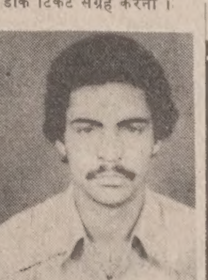

बुलचन्द श्री पुरुषोत्तम, कि सोसायटी उल्हास नगर, । वर्ष, दीवाना पढ़ना ।


विनोद थापर, 105 प्रेमपुरा, रेलवे रोड हापुड़, 18 वर्ष, दीवाना पढ़ना, तार भेजना ।


पंडित भवालाल परदेशी, महत-वाना पुरा, महोबा, 30 वर्ष, पत्र मित्रता करना ।


राज मागर, 73 आनन्द भवन, कवर नगर जयपुर, 21 वर्ष, पत्र मित्रता करना ।


अनिल कुमार, कटरा मान राय, बरेली उ. प्र., 16 वर्ष, उछल-कूद करना ।


धर्मवीर चावला द्वारा सोनू नावल एण्ड जनरल स्टोर चौड़ी सड़क लुधियाना, (पंजाब)

दीवाना फ्रेंड्स क्लब

दीवाना फ्रैंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रैंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिये जिसे दीवाना में प्रकाशित किया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।

हमारा पता : दीवाना फ्रैंड्स क्लब, ८-ए, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२
कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम ——————
पता ——————
आयु ——————
शौक ——————



दीवाना चिपकी

हम सब भारत के सैनिक हैं

तो हमारे रम का कोटा कहां है ?

दीवाना

R.N. 16596/65 Regd. No. D-(C)1020/82

जीवन और हनु आश्चर्य चकित

घोड़े की समझ पर



'क्लेवर हंस' एक ऐसा घोड़ा था जो 20 वीं शताब्दी के शुरू-शुरू में हुआ था। वह पढ़ ही नहीं, गणित के सवाल भी हल कर लेता था और दुनिया भर के राजनैतिक सवालों के जवाब भी दे सकता था।

गणित के सवाल पूछे जाने पर (जैसे 3 और 4 कितने होते हैं) हंस जवाब में अपने पैरों से थाप देता था (इस सम्बन्ध में सात बार)।

गणित के अलावा अन्य प्रश्नों (जैसे 'क्या लन्दन ब्रिटेन की राजधानी है'?) के जवाब वह सिर हिला या घुमाकर देता था। वह ब्लेक बोर्ड पर लिखे सवालों के जबाब भी दे देता था।

अन्त में हंस का भेद खुल ही गया। वह सदा



अपने आस- पास खड़े लोगों, विशेषतया अपने स्वामी आस्टेन के हाव-भावों को ध्यान से देखता रहता था। गणित का सवाल पूछे-जाने पर, पब्लिक हंस के पैरों की तरफ देखने लगती...



सो वह थाप देना शुरू कर देता था। जवाब के अनुसार जब वह थाप लगा लेता तो लोगों में किसी ने किसी तरह की प्रतिक्रिया होती थी। वह या तो सिर हिलाने, चैन की सांस लेने या मुस्कारने लगते थे। हंस उस समय थाप लगाना बन्द कर देता था। इसी तरह,अन्य किस्म के सवालों के लिए भी वह कोई न कोई इशारा पा ही जाता था। यह उसने कैसे सीखा यह कोई नहीं जान सका।

आश्चर्य की बात तो यह है, घोड़े की तरकीब जान जाने के बाद भी, लोगों के लाख प्रयत्न करने पर भी कि वह हल्के सा हल्का इशारा भी न दें, वह कोई न कोई इशारा पा ही जाता था।





जीवन बीमा–आपके भविष्य की सुरक्षा का सबसे सुरक्षित उपाय. इसके बारे में अधिक जानिए.

भारतीय
जीवन बीमा निगम

dacunha/LIC/127/82 Hin